SR. No.	SUBJECT- SST	CLASS-10 NOTES BY GOVIND MEENA TGT SST KV GUNA	PAGE N0.
1	HISTORY	CHAPTER - 01 : THE RISE OF NATIONALISM IN EUROPE	2
2		CHAPTER - 02 : NATIONALISM IN INDIA	4
3		CHAPTER - 03 : THE MAKING OF GLOBAL WORLD	7
4		CHAPTER - 05 PRINT CULTURE AND THE MODERN WORLD	8
5	CIVICS	CHAPTER - 1 : POWER SHARING	10
6		CHAPTER - 2 : FEDERALISM	11
7		CHAPTER - 3 : GENDER, RELIGION AND CASTE	12
8		CHAPTER - 4 : POLITICAL PARTIES	14
9		CHAPTER - 5 : OUTCOME OF DEMOCRACY	15
10	ECONOMICS	CHAPTER - 01 : DEVELOPMENT	16
11		CHAPTER - 02 : SECTORS OF THE INDIAN ECONOMY	18
12		CHAPTER - 03 : MONEY AND CREDIT	20
13		CHAPTER - 04 GLOBALISATION AND THE INDIAN ECONOMY	21
14	GEOGRAPHY	CHAPTER - 1 : RESOURCE AND DEVELOPMENT	22
15		CHAPTER - 2 : FOREST AND WILDLIFE RESOURCES	24
16		CHAPTER - 3 : WATER RESOURCES	25
17		CHAPTER - 4 : AGRICULTURE	26
18		CHAPTER : 5 MINERALS AND ENERGY RESOURCES	28
19		CHAPTER 6 - MANUFACTURING INDUSTRIES	30

By Govind Kumar Meena

TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

CLASS 10 : - HISTORY IMPORTANT NOTES
CHAPTER - 01 : THE RISE OF NATIONALISM IN EUROPE

फ्रांसीसी क्रांति और राष्ट्र का विचार - फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य फ्रांसीसी लोगों में सामूहिक पहचान की भावना पैदा करना था.

1. फ्रांस में राजशाही समाप्त कर और गणराज्य की स्थापना.
2. संविधान और कानून के तहत समान अधिकार.
3. पित्र भूमि (La Patrie) और नागरिक (Le Citoyen) के विचार का जन्म.
4. पुराने शाही ध्वज को नए फ्रांसीसी तिरंगे ध्वज से बदल दिया गया था।
5. अब एस्टेट्स जनरल मै चुनाव होते थे और इसका नाम बदलकर नेशनल असेंबली कर दिया गया
6. फ्रेंच आम भाषा बन गई, जिससे भाषाई एकता आई, शहीदों की शपथ ली गई, नये गीत लिखे गये.
7. केंद्रीकृत प्रशासन प्रणाली प्रारंभ हुई और आंतरिक कर, सीमा शुल्क और देय राशि समाप्त कर दी गई
8. बाट और माप की पूरे देश में एक समान प्रणाली शुरू. "***1789*** की फ्रांसीसी क्रांति राष्ट्रवाद की पहली स्पष्ट अभिव्यक्ति थी।**"**

1804 का नागरिक संहिता / नेपोलियन कोड - नेपोलियन - 1799 से 1815 तक फ्रांस पर शासन किया, 1804 में नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना. सम्राट बनने के बाद उस में निम्न सुधार किए.

1. कानून के समक्ष समानता स्थापित की.
2. संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित किया.
3. फ्रांस मे कर (Tax) और प्रशासनिक व्यवस्था को सरल किया.
4. सामंती व्यवस्था और जन्म आधारित विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया.
5. किसानों को भू-दासता और जागीरदारों से मुक्त कराया.
6. शहरों में कारीगरों के श्रेणी संघ (Guild) से लगे प्रतिबंध हटा दिए गए.
7. परिवहन और संचार प्रणालियों में सुधार किया गया और एक राष्ट्रीय मुद्रा बनाई गई.

कुलीन वर्ग **(ARISTOCRACY)**

1. सामाजिक और राजनीतिक रूप से कुलीन वर्ग यूरोप में प्रमुख वर्ग था।
2. इस वर्ग के लोग साझा जीवन जीते थे.
3. कुलीन वर्ग के परिवार वैवाहिक संबंधों से जुड़े रहते थे.
4. यह शक्तिशाली कुलीन वर्ग संख्यात्मक रूप से एक छोटा समूह था।
5. इस वर्ग के पास सबसे ज्यादा जमीन होती थी.

नया मध्यमवर्ग

1. यह शिक्षित था जो राष्ट्रीय वादी विचारों को आगे बढ़ा रहा था.
2. स्वतंत्रता और कानून के समक्ष सभी की समानता हो.
3. लोगों की सहमति से सरकार बने.
4. एक संविधान हो और प्रतिनिधि सरकार बने जोकि संसद के माध्यम से चले.
5. मताधिकार - मतदान अधिकार की मांग.
6. आर्थिक स्वतंत्रता - माल और पूंजी की आवाजाही पर राज्य द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का समाप्त हो.

उदारवादी राष्ट्रवाद के मायने - 19वीं यूरोप की शुरुआत में उदारवाद की विचारधारा। शब्द 'उदारवाद' लैटिन मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है मुक्त ।

1. स्वतंत्रता और कानून के समक्ष सभी की समानता हो.
2. लोगों की सहमति से सरकार बने.
3. एक संविधान हो और प्रतिनिधि सरकार बने जोकि संसद के माध्यम से चले.
4. मताधिकार - मतदान अधिकार की मांग.
5. आर्थिक स्वतंत्रता - माल और पूंजी की आवाजाही पर राज्य द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का समाप्त हो.

1815 के बाद एक नया रूढ़िवाद - 1815 में विएना संधि हुई.

1. नेपोलियन द्वारा किए गए परिवर्तनों को समाप्त किया.
2. राजतंत्रों को बहाल करना था जिन्हें नेपोलियन ने उखाड़ फेंका था। फ्रांस में बोर्बोन राजवंश सत्ता में बहाल किया.
3. भविष्य में फ्रांसीसी विस्तार को रोकने के लिए फ्रांसीसी सीमा पर राज्यों की एक श्रृंखला बनाई गई.
4. 1815 में स्थापित रूढ़िवादी शासन निरंकुश थे। उन्होंने आलोचना और असंतोष को बर्दाश्त नहीं किया.
5. अखबार, किताबें, नाटक सेंसरशिप लगाई और स्वतंत्रता के विचारों को प्रतिबिंबित किया.
6. जर्मन परिसंघ विखंडित नहीं किया गया.

क्रांतिकारी

1. एक क्रांतिकारी वह है जो अचानक, तीव्र और कठोर परिवर्तन का समर्थन करता है।
2. 1815 के बाद के वर्षों में दमन के डर ने कई उदार-राष्ट्रवादियों को भूमिगत कर दिया।
3. क्रांतिकारियों को प्रशिक्षित करने और उनके विचारों को फैलाने के लिए कई यूरोपीय राज्यों में गुप्त संगठन बनाए.
4. वियना कांग्रेस के बाद स्थापित किए गए राजतंत्रीय रूपों का विरोध करने की प्रतिबद्धता, और
5. स्वतंत्रता के लिए लड़ना।

ज्यूसेपे मेत्सिनी/ मैज़िनी

1. इतालवी क्रांतिकारी थे.
2. कार्बोनारी गुप्त सोसाइटी के सदस्य रहे.
3. दो भूमिगत संगठन बनाएं. – **I.** यंग इटली,**1831 & II.** यंग यूरोप
4. मैज़िनी इटली को एक गणतंत्र के रूप में एकीकरण में विश्वास रखते थे.
5. मैजिनी ने राजशाही का विरोध किया और लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का समर्थन किया इससे रूढ़ीवादी डर गए थे.
6. इस कारण मेटरनिख ने उन्हें ''हमारी सामाजिक व्यवस्था (राजशाही) का सबसे खतरनाक दुश्मन' बताया।''

यूनानी स्वतंत्रता संग्राम

1. यूनान (ग्रीस) 15वीं शताब्दी से तुर्क साम्राज्य(ऑटोमन साम्राज्य) का हिस्सा रहा है।
2. यूरोप में क्रांतिकारी आंदोलनों के विकास ने यूनानियों को अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए उकसाया।

3. कई पश्चिमी यूरोपीय लोगों ने प्राचीन यूनानी संस्कृति के प्रति सहानुभूति रखने के लिए यूनानियों का समर्थन किया।
4. कवियों और कलाकारों ने तुर्क साम्राज्य के खिलाफ उसके संघर्ष का समर्थन करने के लिए जनमत तैयार किया।
5. अंत में, **1832** में, कांस्टेंटिनोपल की संधि के साथ, ग्रीस को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दी गई थी।

1848 में उदारवादी क्रांति **-** फ्रांस में 1848 में भोजन की कमी और व्यापक बेरोजगारी ने पेरिस की आबादी सड़कों पर उतर गई और लुई फिलिप को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

1. नेशनल असेंबली ने एक गणतंत्र की घोषणा की
2. 21 से ऊपर के सभी वयस्क पुरुषों को मताधिकार प्रदान किया.
3. काम करने के अधिकार की गारंटी दी।
4. रोजगार प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय कार्यशालाएँ स्थापित की गईं।

अगर फ्रांस छींकता है**,** तो बाकी यूरोप को सर्दी लग जाती है**' -** मेटरनिख

यूरोप में राष्ट्रवादी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

1. उन्होंने राजनीतिक बैठकों और प्रदर्शनों में भाग लिया।
2. महिलाओं ने फ्रैंकफर्ट संसद में भी भाग लिया, हालांकि पर्यवेक्षकों (Observer) के रूप में,क्योंकि उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं दिया गया था।
3. उदारवादी आंदोलन में महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।
4. महिलाओं ने अपने स्वयं के राजनीतिक संघ बनाये।
5. अखबारों की स्थापना की.
6. *1946* में फ्रांस में महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया गया था।

ओट्टो वॉन बिस्मार्क को जर्मन एकीकरण का वास्तुकार माना जाता है।

1. वह विशेष रूप से अपनी "लौह और रक्त" नीति के लिए जाने जाते हैं।
2. उन्होंने सेना और नौकरशाही के साथ जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया को अंजाम दिया।
3. प्रशिया द्वारा सात वर्षों में तीन युद्ध जीतने के बाद एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई।
4. जनवरी 1871 में, प्रशिया के विलियम 1^{st} को जर्मन सम्राट घोषित किया गया
5. और एकीकरण बाद ओट्टो वॉन बिस्मार्क जर्मनी के चांसलर बने।

जर्मनी का एकीकरण

1. जर्मन एकीकरण लंबी और जटिल प्रक्रिया थी.
2. जर्मनी 39 निरंकुश राज्य में विभाजित था।
3. प्रशिया,जर्मन एकीकरण का Leader बन गया
4. चांसलर ओटो वॉन बिस्मार्क प्रशिया की सेना और नौकरशाही के समर्थन से इस जर्मन एकीकरण के वास्तुकार थे।
5. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया तब पूरी हुई जब प्रशिया ने सात वर्षों में तीन युद्ध जीते।
6. जनवरी 1871 में, विलियम प्रथम को जर्मन सम्राट घोषित किया गया और एक लंबे संघर्ष के बाद जर्मनी का एकीकरण हो गया.

इटली का एकीकरण

1. इटली का एकीकरण एक लम्बी एवं जटिल प्रक्रिया थी
2. इटली 7 निरंकुश राज्यों में विभाजित था।
3. ग्यूसेप माज़िनी ने यंग इटली की स्थापना की।
4. काउंट कैवूर ने कूटनीतिक ढंग से उत्तरी इटली को मुक्त करा लिया।
5. सशस्त्र स्वयंसेवक गैरीबाल्डी ने दक्षिण इटली और दो सिसिली साम्राज्य में मार्च किया।
6. 1861 में विक्टर इमैनुएल 2^{nd} को इटली का राजा घोषित किया गया और लम्बे संघर्ष के बाद इटली का एकीकरण हुआ।

ब्रिटेन का अजीब मामला **-** 18वीं शताब्दी से पहले कोई ब्रिटिश राष्ट्र नहीं था। अन्य यूरोपीय एकीकरण के विपरीत, यह राष्ट्रवादी विद्रोह का परिणाम नहीं था।

1. ब्रिटिश द्वीपों में चार मुख्य जातीय क्षेत्र शामिल थे- अंग्रेजी, वेल्श, स्कॉट और आयरिश।
2. अंग्रेजी राष्ट्र शक्तिशाली और धनी हो गया।
3. एकीकरण का निर्णय ब्रिटिश संसद द्वारा लिया गया था।
4. इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के बीच संघ अधिनियम, 1707 ने 'यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' का गठन किया।
5. 1798 में वोल्फ टोन और उसके आयरिश लोगों के असफल विद्रोह के बाद, आयरलैंड को 1801 में यूनाइटेड किंगडम में शामिल किया गया था। इस प्रकार ब्रिटेन का एकीकरण हो गया.

बाल्कन **मुद्दा**

1. दक्षिण-पूर्वी यूरोप बाल्कन क्षेत्र है।
2. बाल्कन पर 15वीं शताब्दी से ओटोमन साम्राज्य का शासन था
3. बाल्कन के क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता मांग की।
4. बाल्कन राज्यों को स्वतंत्रता मिलने के बाद वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करने लगे और अपने क्षेत्रों का विस्तार करना चाहते थे।
5. यूरोपीय शक्तियों का प्रवेश - ऑस्ट्रो-हंगरी, रूस, जर्मनी और ब्रिटेन इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व बढ़ाना चाहते थे। जिससे यह क्षेत्र अत्यंत विस्फोटक बन गया है।

और इसके परिणामस्वरूप युद्धों की शृंखला शुरू हुई...जिसे प्रथम विश्व युद्ध के नाम से जाना जाता है.

CLASS 10 : - HISTORY IMPORTANT NOTES
CHAPTER - 02 : NATIONALISM IN INDIA

प्रथम विश्व युद्ध का भारत पर प्रभाव - प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) ने "एक नई राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पैदा की". युद्ध काल के दौरान भारत को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा:

1. रक्षा व्यय में वृद्धि.
2. युद्ध के वर्षों के दौरान कीमतें बढ़ीं।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में जबरन भर्ती।
4. 1918-19 और 1920-21 के दौरान भारत के कई हिस्सों में फसलें बर्बाद हो गईं।
5. युद्ध ख़त्म होने के बाद भी मुश्किलें ख़त्म नहीं हुईं. इसी समय एक नया नेता प्रकट हुआ और उसने संघर्ष का एक नया तरीका सुझाया.

सत्याग्रह का विचार - जनवरी 1915 में महात्मा गांधी भारत लौट आए, दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने जन आंदोलन की एक नई पद्धति के साथ नस्लवादी शासन से सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी, जिसे उन्होंने सत्याग्रह कहा।

1. सत्याग्रह का अर्थ है सत्य पर जोर देना।
2. यह एक अहिंसात्मक और गैर-आक्रामक तरीका है।
3. उत्पीड़न एवं अन्याय के विरुद्ध शांतिपूर्ण जन आंदोलन।
4. यह एक नैतिक शक्ति है, निष्क्रिय प्रतिरोध (not passive resistance) नहीं।
5. सत्याग्रह भारत में औपनिवेशिक शासन से लड़ने का एक नया तरीका है।
6. गांधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलनों का आयोजन किया

A. चंपारण नील किसान सत्याग्रह**, 1917**

1. गांधी जी के नेतृत्व मे
2. यूरोपीय भूमि मालिकों और सरकारी नीतियों के विरुद्ध।
3. ब्रिटिश जमींदार स्थानीय किसानों पर नील की खेती करने और उसे कम कीमत पर खरीदने के लिए दबाव डालते थे।
4. जवाब में ब्रिटिश सरकार ने गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया और बाद में रिहा कर दिया।
5. अंततः किसानों की स्थिति में सुधार के लिए ब्रिटिश सरकार ने संशोधन किये

B. खेड़ा किसान सत्याग्रह**,1917**

1. गांधी जी के नेतृत्व में
2. खेड़ा में किसानों की फसलें बर्बाद,
3. अतिरिक्त कर और सरकारी नीतियों के ख़िलाफ़.
4. गांधीजी के मार्गदर्शन में सरदार पटेल ने अतिरिक्त कर और नीतियों के विरोध में किसानों का नेतृत्व किया।
5. अंततः किसानों की स्थिति में सुधार के लिए ब्रिटिश सरकार ने संशोधन किये.

C. अहमदाबाद कॉटन मिल सत्याग्रह**,1918**

1. गांधी जी के नेतृत्व में
2. 1917 में, भारी मानसून ने मौसम की फसलें नष्ट कर दीं और महामारी (प्लेग) फैल गई, जिससे अहमदाबाद में 10% से अधिक लोगों की जान चली गई।
3. श्रमिक उच्च वेतन और प्लेग बोनस चाहते हैं।
4. गांधीजी ने शांतिपूर्ण सत्याग्रह/हड़ताल का आयोजन किया।
5. आखिरकार श्रमिकों को लाभ मिल ही गया.

रॉलेट एक्ट **(1919)** - इसने सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को दबाने की भारी शक्तियाँ दीं, और राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमे के दो साल तक हिरासत में रखने की अनुमति दी।

NO Court Trial : No Vakil, No Dalil, No Appeal

गांधी जी ऐसे अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ अहिंसक सविनय अवज्ञा चाहते थे, जिसकी शुरुआत 6 अप्रैल को हड़ताल से होगी।

जलियांवाला बाग नरसंहार - अमृतसर

1. 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग के बंद मैदान में भारी भीड़ जमा हुई थी।
2. डायर ने क्षेत्र में प्रवेश किया, निकास बिंदुओं को अवरुद्ध कर दिया और भीड़ पर गोलियां चला दीं, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए।
3. जैसे ही यह खबर फैली, हड़तालें, पुलिस के साथ झड़पें और सरकारी इमारतों पर हमले शुरू हो गये।
4. सरकार ने क्रूर दमन के साथ जवाब दिया।
5. हिंसा फैलते ही गांधी जी ने रौलट सत्याग्रह बंद कर दिया

खिलाफत आंदोलन

1. खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व दो भाइयों शौकत अली और मुहम्मद अली ने किया था।

2. खलीफा की अस्थायी शक्तियों (ओटोमन साम्राज्य) की रक्षा के लिए मार्च 1919 में बॉम्बे में खिलाफत समिति का गठन किया गया था।

3. गांधीजी ने कांग्रेस को खिलाफत आंदोलन के साथ हाथ मिलाने और स्वराज के लिए असहयोग अभियान शुरू करने के लिए राजी किया।

कलकत्ता कांग्रेस सत्र सितंबर **1920** - गांधीजी ने भविष्यवाणी की कि यदि असहयोग आंदोलन सफल रहा, तो एक वर्ष में स्वराज प्राप्त किया जा सकता है।

दिसंबर **1920** में नागपुर में कांग्रेस अधिवेशन - में असहयोग कार्यक्रम अपनाया गया।

गांधीजी द्वारा लिखित हिंद स्वराज पुस्तक**(1909)** - उन्होंने पुस्तक में लिखा है कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था, और इस सहयोग के कारण ही जीवित रहा था। यदि भारतीयों ने सहयोग करने से इनकार कर दिया, तो भारत में ब्रिटिश शासन एक वर्ष के भीतर समाप्त हो जाएगा और स्वराज आ जाएगा

असहयोग-खिलाफत आंदोलन

1. जनवरी 1921 में शुरू हुआ।
2. कस्बों में आंदोलन इसकी शुरुआत शहरों में मध्यम वर्ग की भागीदारी से हुई।
3. छात्रों, शिक्षकों, वकीलों ने पढ़ाई, नौकरियाँ, वकालत छोड़ दी और आंदोलनों में शामिल हो गए।
4. काउंसिल चुनाव का बहिष्कार किया गया.
5. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया।

6. शराब की दुकानों पर महिलाओं द्वारा धरना दिया गया.
7. ग्रामीण इलाकों में हलचल किसानों और आदिवासियों ने संघर्ष पर कब्ज़ा कर लिया जो धीरे-धीरे हिंसक हो गया।
8. चौरी चौरा, 1922 की हिंसक घटना के बाद गांधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

अवध किसान आंदोलन - नेतृत्व बाबा रामचन्द्र सन्यासी ने किया

1. जमींदारों और तालुकेदारों के विरुद्ध।
2. किसान आंदोलन की मांग - Tax में कमी, बेगार की समाप्ति और उत्पीड़क जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार
3. 1920 में जवाहरलाल नेहरू, बाबा रामचन्द्र की अध्यक्षता में अवध किसान सभा की स्थापना की गई
4. 1921 में जैसे ही आंदोलन फैला, तालुकदारों और व्यापारियों के घरों पर हमले किए गए, बाज़ारों को लूट लिया गया और अनाज के भंडारों पर कब्ज़ा कर लिया गया।

आदिवासी आंदोलन - अल्लूरी सीताराम राजू

1. अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में
2. वन कानूनों के विरुद्ध।
3. आंध्र प्रदेश की गुडेम पहाड़ियों में गुरिल्ला युद्ध।
4. विद्रोहियों ने पुलिस स्टेशनों पर हमला किया.
5. गुडेम विद्रोह 1921 में असहयोग आंदोलन के जवाब में फैला। (कांग्रेस ने इनकार किया)
6. 1924 में राजू को पकड़ लिया गया और फाँसी दे दी गई।

बागानों में स्वराज

1. बागान श्रमिकों के लिए, स्वराज का अर्थ स्वतंत्र रूप से घूमना है।
2. उन्होंने अंतर्देशीय उत्प्रवास अधिनियम (1859) का विरोध किया जो उन्हें बिना अनुमति के बागान छोड़ने से रोकता था।
3. प्रत्येक समूह ने स्वराज शब्द की अपने-अपने तरीके से व्याख्या की।

स्वराज पार्टी, **1922 –**

1. 1922 में सी. आर. दास और मोतीलाल नेहरू द्वारा गठित
2. चुनाव / परिषद की राजनीति में वापसी.

साइमन कमीशन

1. 1928 में भारत आया.
2. इसका स्वागत 'साइमन वापस जाओ' के नारे के साथ किया गया।
3. प्रदर्शनों में कांग्रेस और मुस्लिम लीग समेत सभी पार्टियों ने हिस्सा लिया

कांग्रेस लाहौर अधिवेशन दिसंबर **1929 -** जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में,

1. भारत के लिए 'पूर्ण स्वराज' या पूर्ण स्वतंत्रता की मांग।
2. यह घोषणा की गई कि 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा.

दांडी नमक मार्च **-** गांधीजी द्वारा + 78 स्वयंसेवक

1. 12 मार्च 1930 से 6 अप्रैल 1930)
2. साबरमती से दांडी (240 मील)
3. क्योंकि लॉर्ड इरविन ने नमक कर (Tax) को ख़त्म करने की मांग को नज़रअंदाज़ कर दिया था।
4. वह 6 अप्रैल को दांडी पहुंचे, समुद्री जल से नमक बनाया और कानून का उल्लंघन किया।
5. इससे सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन **-** यह असहयोग आंदोलन से अलग था क्योंकि अब लोगों को न केवल सहयोग से इनकार करने के लिए कहा गया. औपनिवेशिक कानूनों को तोड़ने के लिए भी कहा गया।

1. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार,
2. करों का भुगतान न करना,
3. वन कानूनों को तोड़ना इसकी प्रमुख विशेषताएँ थीं।
4. महिलाओं द्वारा शराब की दुकानों पर धरना दिया गया।
5. .विरोध में महिलाओं ने भी हिस्सा लिया.
6. ब्रिटिश सरकार ने क्रूर दमन की नीति अपनाई।
7. ब्रिटिश सरकार ने गांधीजी और नेहरू सहित सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।
8. महात्मा गांधी ने आंदोलन बंद कर दिया।

गांधी-इरविन समझौता,**1931**

1. लॉर्ड इरविन और गांधी के बीच.
2. 1931 में गांधीजी दूसरे गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए लेकिन निराश होकर लौट आए।
3. गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू किया लेकिन 1934 तक इसने अपनी गति खो दी।

पूना समझौता सितम्बर,**1932**

1. गांधी जी और डॉ. बी.आर. के बीच
2. अम्बेडकर दलितों/अछूतों ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया, उन्होंने सीटों के आरक्षण, अलग निर्वाचन क्षेत्रों की मांग की।
3. अम्बेडकर ने 1930 में डिप्रेस्डक्लास एसोसिएशन का गठन किया.
4. उनका गांधी जी से टकराव हुआ।
5. पूना पैक्ट ने प्रांतीय और केंद्रीय परिषदों में आरक्षित सीटें दीं लेकिन उन पर आम मतदाताओं द्वारा मतदान किया गया.

सामूहिक अपनेपन की भावना

1. सामूहिक अपनेपन की भावना एकजुट संघर्षों के अनुभव से आई।
2. राष्ट्रीय पहचान स्थापित की गई: इतिहास और कथा, लोकगीत और गीत, लोकप्रिय प्रिंट और प्रतीक, सभी ने राष्ट्रवाद के निर्माण में भूमिका निभाई।
3. गांधीजी द्वारा भारतीय ध्वज के निर्माण ने नागरिकों में राष्ट्रवाद की भावना पैदा की।
4. अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाई गई भारत माता पेंटिंग।
5. राष्ट्रवादियों ने लोगों को हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास की याद दिलाई।

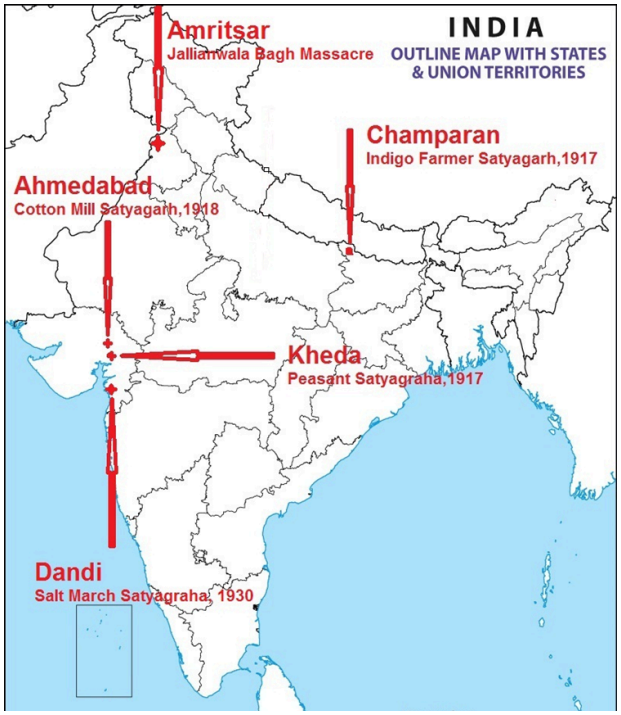

Indian National congress Sessions

a. Calcutta (Sep. 1920)

b. Nagpur (Dec. 1920)

c. Madras (1927)

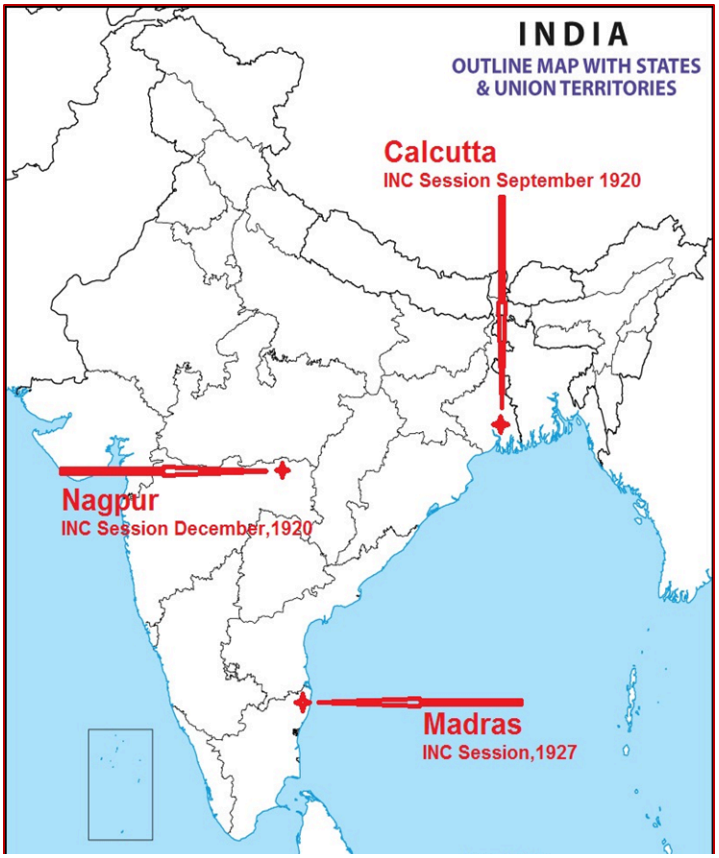

Important Centres of Indian Freedom Movement

a. Champaran (Bihar) – Movement of Indigo Planters

b. Kheda (Gujrat) – Peasant Satyagraha

c. Ahmedabad (Gujrat) – Cotton Mill Workers Satyagraha

d. Amritsar (Punjab) – Jallianwala Bagh Incident

e. Chauri Chaura (U.P.) – Calling off the Non-Cooperation Movement

f. Dandi (Gujrat) – Civil Disobedience Movement

By Govind Kumar Meena

TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

CLASS 10 : - HISTORY IMPORTANT NOTES
CHAPTER - 03 : THE MAKING OF GLOBAL WORLD

The Making of a Global World - (To be evaluated in the Board Examination)- Subtopics:1 to 1.3 Pre Modern World to Conquest, Disease and Trade)

THE PRE-MODERN WORLD -

वैश्वीकरण - का अर्थ है हमारी अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप विश्व के विभिन्न देश आर्थिक रूप से एक-दूसरे पर निर्भर हो गये हैं।

वैश्विक विश्व' के निर्माण के उत्तरदायी कारक:-

1. व्यापार *2.* प्रवास *3.* पूंजी का प्रवाह *4.* इंटरेक्शन

1. वैश्विक दुनिया के निर्माण का एक लंबा इतिहास है। कई लोगों ने ज्ञान, अवसर और बहुत कुछ के लिए लंबी दूरी की यात्रा की।

2. यात्री अपने साथ सामान, पैसा, मूल्य, कौशल, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु और बीमारियाँ भी ले गए।

3. कौड़ी (हिन्दी कौड़ी या सीपियाँ, जिसका उपयोग मुद्रा के रूप में किया जाता है।

1.1 SILK ROUTES LINK THE WORLD -

रेशम मार्ग - भूमि और समुद्र द्वारा - एशिया के विशाल क्षेत्रों को जोड़ता है, और एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से जोड़ता है।

A. व्यापार, सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान
B. रेशम मार्ग व्यापार उत्पाद
   1. रेशम और सूती वस्त्र
   2. मसाला व्यापार
   3. मिट्टी के बर्तनों का व्यापार
   4. यूरोप से एशिया तक कीमती धातु।
   5. धर्म प्रचार - ईसाई, इस्लाम, बौद्ध धर्म

1.2 FOOD TRAVELS: SPAGHETTI AND POTATO - भोजन लंबी दूरी के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है।

1. स्पेगेटी (पास्ता) बनने के लिए नूडल्स ने चीन से पश्चिम की ओर यात्रा की।

2. आलू, सोया, मूंगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद जैसे सामान्य खाद्य पदार्थ केवल क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज के बाद यूरोप और एशिया में पेश किए गए थे।

3. Fact - सोया, मूंगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद आदि अमेरिका से आए

1.3 CONQUEST, DISEASE AND TRADE - अमेरिका की खोज के बाद पूर्व आधुनिक विश्व सिकुड़ गया।

1. अमेरिका और यूरोप के बीच केंद्रीय स्थिति के कारण भारत निर्णायक बिंदु बन गया।
2. अमेरिका की बहुमूल्य धातुएँ-
   1. चाँदी - पेरू और मैक्सिको
   2. सोना - एल डोरैडो *(सोने का शहर)*
3. 'जैविक' युद्ध - स्पेनिश विजेताओं ने अमेरिका की विजय में चेचक के कीटाणुओं का इस्तेमाल किया।
4. यूरोपीय बाज़ारों के लिए कपास और चीनी उगाने के लिए अफ़्रीका में दासों को पकड़ लिया गया।
5. अठारहवीं शताब्दी तक, चीन और भारत दुनिया के सबसे अमीर देशों में से थे।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

CLASS 10 : - HISTORY IMPORTANT NOTES
CHAPTER - 05 PRINT CULTURE AND THE MODERN WORLD

पहली मुद्रित पुस्तकें (मुद्रण का इतिहास)

- पूर्वी एशिया में मुद्रण की शुरुआत - सबसे प्रारंभिक मुद्रण तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई थी।
- चीन में छपाई - चीन में पहली किताब 594 ई. में वुडब्लॉक्स तकनीक से छपी.
- सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए मुद्रण होता था.
- 19वीं सदी के अंत में, पश्चिमी मुद्रण तकनीकों का चीन में आयात किया गया।
- शंघाई नई मुद्रण संस्कृति का केंद्र बन गया।
- जापान में छपाई - 768-770 ई. के आसपास, चीन के बौद्ध मिशनरियों ने जापान में हाथ से छपाई की तकनीक पेश की।
- बौद्ध डायमंड सूत्र - सबसे पुरानी जापानी पुस्तक जो 868 ई. में छपी थी।
- एडो (टोक्यो) - चित्रों का सचित्र संग्रह।
- सुलेख - सुंदर और शैलीबद्ध लेखन की कला

यूरोप में मुद्रण का आना

- 11वीं सदी में चीनी कागज रेशम मार्ग से यूरोप पहुंचा।
- 1295 में, मार्को पोलो (इतालवी) एक महान खोजकर्ता, चीन से इटली लौटे और मुद्रण ज्ञान अपने साथ यूरोप लाए।
- इटालियंस ने लकड़ी के ब्लॉकों से किताबें बनाना शुरू किया और जल्द ही यह तकनीक यूरोप के अन्य हिस्सों में फैल गई।

जोहान गुटेनबर्ग:-

- प्रथम यांत्रिक मुद्रण मशीन के आविष्कारक।
- 'द बाइबल', 1448 - गुटेनबर्ग की बाइबिल, यूरोप में पहली मुद्रित पुस्तक।
- बाइबिल की 180 प्रतियां (उत्पादन में 3 वर्ष लगे) - उस समय के मानकों के अनुसार, यह तेजी से उत्पादन था।

प्रिंट क्रांति और उसका प्रभाव : नया पाठक वर्ग - किताबों तक पहुंच ने पढ़ने की एक नई संस्कृति पैदा की और किताबों की बाजार में बाढ़ आ गई।

- धार्मिक विवाद और छपाई का डर

मार्टिन लूथर:- चर्च में जर्मन भिक्षु।

- धर्म सुधार आंदोलन के नेता.
- उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च की कई प्रथाओं और रीति-रिवाजों की आलोचना करते हुए 95 थीसिस लिखीं।
- इसने चर्च को उनके विचारों पर बहस करने की चुनौती दी।
- इससे चर्च के भीतर विभाजन हुआ और प्रोटेस्टेंट सुधार की शुरुआत हुई।
- लूथर ने कहा था, "मुद्रण ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार और सबसे बड़ा उपहार है"।

दुनिया के जालिमो अब तुम हिलोगे

1. 18वीं सदी तक प्रिंटिंग प्रेस सबसे शक्तिशाली थी.
2. मुद्रण ने राजशाही और चर्च की पुरानी रीति-रिवाजों पर सवाल उठाए।
3. किताबें दुनिया को बदल सकती हैं, समाज को निरंकुशता से मुक्त करा सकती हैं।
4. प्रिंट मीडिया ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए परिस्थितियाँ निर्मित कीं.
5. इस कथन ने स्पष्ट किया कि अब अत्याचार नहीं चलेगा।
6. इसीलिए मर्सिएर ने घोषणा की - 'इसलिए कांपो, दुनिया के अत्याचारियों!'

मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रांति - मुद्रण संस्कृति ने वे परिस्थितियाँ निर्मित कीं जिनके अंतर्गत फ्रांसीसी क्रांति हुई।

1. पहला - मुद्रण ने विचारकों के विचारों को लोकप्रिय बनाया।
2. दूसरा - मुद्रण ने संवाद और बहस की एक नई संस्कृति का निर्माण किया।
3. तीसरा - 1780 के दशक तक साहित्य में राजघराने का मज़ाक उड़ाया जाता था और उनकी नैतिकता की आलोचना बड़ी संख्या में की जाती थी।

- साहित्य भूमिगत रूप से प्रसारित हुआ और राजशाही के खिलाफ भावनाओं को बढ़ावा मिला।
- वोल्टेयर और रूसो, वे भी राजशाही और चर्च आलोचक थे.
- उपरोक्त मुद्रण स्थिति ने फ्रांसीसी क्रांति की.

19वीं शताब्दी में मुद्रण

- बच्चे, महिलाएँ और श्रमिक महत्वपूर्ण पाठक और लेखक भी।
- 1857 में फ्रांस में बच्चों के लिए एक प्रेस की स्थापना की गई।
- पेनी पत्रिकाएँ (महिलाओं के लिए) - उचित व्यवहार और गृह व्यवस्था सिखाने वाली नियमावली।
- 19वीं सदी में - इंग्लैंड में पुस्तकालय सफेदपोश श्रमिकों, कारीगरों और निम्न-मध्यम वर्ग के लोगों को शिक्षित करने का एक माध्यम बन गए।

नई तकनीकी परिष्कार

1. प्रेस धातु से बनाई जाने लगी।
2. बेलनाकार प्रेस - रिचर्ड एम. हो (बिजली चालित) प्रति घंटे 8000 शीट की छपाई
3. 19वीं सदी के अंत में, ऑफसेट प्रेस विकसित की गई जो एक समय में छह रंगों तक प्रिंट कर सकती थी।
4. 20वीं सदी तक, विद्युत चालित प्रेसों ने मुद्रण कार्य को गति दे दी।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

इंडिया का प्रिंट संसार - मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियाँ - भारत में, पांडुलिपियों की नकल ताड़ के पत्तों या हस्तनिर्मित कागज पर की जाती थी।

भारत में मुद्रण

- पहला प्रिंटिंग प्रेस -16वीं शताब्दी के मध्य में पुर्तगाली मिशनरियों के साथ गोवा और कई कोंकणी ट्रैक्ट मुद्रित किए गए।
- कोंकणी भाषा में कई किताबें छपीं।
- 1579 में कोचीन में पहली तमिल पुस्तक।
- पहली मलयालम पुस्तक 1713 में छपी थी।
- बंगाल गजट**, 1780,** जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा साप्ताहिक पत्रिका ने वर्णन किया - 'एक व्यावसायिक पत्र जो सभी के लिए खुला है, लेकिन किसी से प्रभावित नहीं है'।
- प्रथम भारतीय साप्ताहिक बंगाल गजट **-** गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा।

प्रिंट **-** धार्मिक एवं सामाजिक सुधार**-** नये विचारों का उदय हुआ।

- सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों के बीच तीव्र वाद-विवाद एवं विवाद।
- विचार स्थानीय भाषाओं (स्थानीय भाषा) में मुद्रित किए गए
- संवाद कौमुदी**,1821 -** राम मोहन राय द्वारा
- हिंदू रूढ़िवादियों द्वारा समाचार चंद्रिका- राम मोहन राय के विचारों का विरोध करने के लिए।
- 1810 में, पहली बार तुलसीदास का रामचरितमानस छपा, जो 16वीं सदी का ग्रंथ था और कलकत्ता में प्रकाशित हुआ।

सार्वजनिक बहस के प्रभाव**:-**

- विभिन्न धर्मों के भीतर और उनके बीच चर्चा, बहस और विवादों को प्रोत्साहित किया।
- भारत के विभिन्न हिस्सों में समुदायों और लोगों को जोड़ा।
- समाचार-पत्रों ने अखिल भारतीय पहचान बनाते हुए समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया।

महिलाएं और प्रिंट

- मध्यम वर्ग में महिलाओं की पढ़ने की आदत बढ़ी।
- उदार पतियों और पिताओं ने अपनी महिलाओं को घर पर ही शिक्षित करना शुरू किया और उन्हें स्कूल भी भेजा।
- महिला शिक्षा, विधवापन और विधवा पुनर्विवाह और राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं पर प्रिंट
- राशसुंदरी देबी **-** आत्मकथा अमर जिबान

महिला लेखिकाएँ**:-**

1. ताराबाई शिंदे - महाराष्ट्र
2. पंडिता रमाबाई - महाराष्ट्र
3. कैलाशबाशिनी देबी - बंगाल

समाज सुधारक **-**

1. ज्योतिबा फुले - दलितों के लिए निम्न जाति आंदोलनों के अग्रदूत। ज्योतिबा फुले ने 1871 में **'**गुलामगिरी**'** - इस पुस्तक में उन्होंने 'निम्न जाति' के अन्याय के बारे में लिखा
2. महाराष्ट्र में बी. आर. अम्बेडकर।
3. मद्रास (परियार) में ई. वी. रामास्वामी नायकर।
4. काशीबाबा - कानपुर के एक मिल मजदूर, ने 1938 में **'**छोटे और बड़े का सवाल**'** लिखी और प्रकाशित की।

प्रिंट और सेंसरशिप

- 1820 के दशक तक, कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट ने प्रेस की स्वतंत्रता को नियंत्रित करने के लिए कुछ नियम पारित किए।
- वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट**, 1878** - पारित किया गया। इसने सरकार को रिपोर्टों को सेंसर करने के व्यापक अधिकार प्रदान किए। लेकिन राष्ट्रवादी समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि हुई।
- बाल गंगाधर तिलक ने **1907** में केसरी में पंजाब के क्रांतिकारियों के पक्ष में लिखा।

CLASS 10 : CIVICS (P.S.) IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 1 : POWER SHARING

बेल्जियम की कहानी

1. बेल्जियम यूरोप का एक छोटा सा देश है।
2. इसकी सीमा नीदरलैंड, फ्रांस और जर्मनी से लगती है।
3. बेल्जियम की दो क्षेत्र है.
   A. फ्लेमिश क्षेत्र में 59% डच बोलते हैं।
   B. वलोनिया क्षेत्र में 40% लोग फ्रेंच बोलते हैं।
   C. 1% बेल्जियम के लोग जर्मनी बोलते हैं।
4. राजधानी शहर ब्रुसेल्स में, 80% लोग फ्रेंच बोलते हैं जबकि 20% डच बोलने वाले हैं।
5. अल्पसंख्यक फ्रांसीसी-भाषी समुदाय अपेक्षाकृत समृद्ध और शक्तिशाली था।
6. इसका डच भाषी समुदाय ने विरोध किया था, जिन्हें आर्थिक विकास और शिक्षा का लाभ बहुत बाद में मिला।
7. ब्रुसेल्स में दो समुदायों फ्रांसीसी-भाषी और डच भाषी के बीच तनाव (1950-1960) अधिक तीव्र था।

बेल्जियम की समझदारी - 1970 और 1993 के बीच, बेल्जियम के संविधान में चार बार संशोधन किया गया ताकि एक ऐसी व्यवस्था तैयार की जा सके जिससे सभी लोग एक साथ रह सकें।

बेल्जियम की समझदारी का मॉडल के तहत संविधान में प्रावधान किया गया-

1. केंद्र सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या बराबर होगी।
2. केंद्र सरकार की कई शक्तियां देश के दोनों क्षेत्रों की राज्य सरकारों को दी गई हैं।
3. ब्रुसेल्स की एक अलग सरकार है जिसमें दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व है।
4. एक भाषा समुदाय के लोगों द्वारा चुनी गई 'सामुदायिक सरकार' का भी प्रावधान है
5. 'सामुदायिक सरकार' - के पास सांस्कृतिक, शैक्षिक और भाषा संबंधी मुद्दों के संबंध में शक्ति है।

श्रीलंका की कहानी

1. श्रीलंका, भारत के दक्षिण में दो करोड़ आबादी वाला एक द्वीप देश है।
2. प्रमुख सामाजिक समूह सिंहली भाषी (74 प्रतिशत) और तमिल भाषी (18 प्रतिशत) हैं।
3. लगभग 7 प्रतिशत ईसाई हैं, जो तमिल और सिंहली दोनों हैं।
4. तमिलों को दो समूहों में बांटा गया है:
   I. श्रीलंकाई तमिल (13 प्रतिशत) - देश के तमिल मूल निवासी
   II. भारतीय तमिल (5 प्रतिशत) - औपनिवेशिक काल के दौरान बागान श्रमिकों के रूप में भारत से आए थे।
5. अधिकांश सिंहली भाषी लोग बौद्ध हैं, जबकि अधिकांश तमिल हिंदू या मुसलमान हैं।

श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद

1. 1948 में श्रीलंका एक स्वतंत्र देश के रूप में उभरा। लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार ने सिंहली वर्चस्व स्थापित करने के लिए कई उपायों को अपनाया:
2. लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार ने सिंहली वर्चस्व स्थापित करने के लिए बहुसंख्यक नीतिगत उपायों की एक श्रृंखला को अपनाया। ये हैं:
   I. 1956 में सिंहली एकमात्र आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाई गई.
   II. सरकार ने पक्षपात करते हुए सभी सरकारी पदों पर सिंहली लोगों को बिठाया.
3. गृहयुद्ध - इन फैसलों ने धीरे-धीरे श्रीलंकाई तमिलों में अलगाव की भावना को बढ़ा दिया।
4. श्रीलंकाई तमिलों ने तमिल को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता देने, क्षेत्रीय स्वायत्तता और शिक्षा और नौकरी हासिल करने के अवसर की समानता के लिए पार्टियों और संघर्षों की शुरुआत की।
5. 1980 के दशक तक श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों में एक स्वतंत्र तमिल ईलम (राज्य) की मांग करते हुए कई राजनीतिक संगठनों का गठन किया गया था।
6. यह जल्द ही गृहयुद्ध में बदल गया।

यदि बेल्जियम के समान श्रीलंका भी सत्ता का बंटवारा कर देता तो श्रीलंका में गृह युद्ध नहीं होता.

सत्ता का बंटवारा वांछनीय क्यों है?

1. सत्ता का बंटवारा अच्छा है क्योंकि यह सामाजिक समूह के बीच संघर्ष की संभावना को कम करने में मदद करता है
2. सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र की आत्मा है।
3. सत्ता के बंटवारे से समाज में रहने वाले विभिन्न जातीय समूहों के बीच संघर्ष की संभावनाओं को कम करने में मदद मिलती है।
4. यह राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद करता है.
5. भारत में - यह भारत में हिंसा और भाषाई समस्याओं को भी कम करता है, भारत में भाषा में विविधता है लेकिन हमारा संविधान सभी भाषाओं को समान अधिकार देता है।
6. आधुनिक कारण - सत्ता के बंटवारे को वास्तव में लोकतंत्र की सच्ची भावना कहा जा रहा है, लोकतंत्र का सार यह राष्ट्र में राजनीतिक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिरता लाने में मदद करता है।

FORMS OF POWER-SHARING - आधुनिक लोकतंत्रों में, सत्ता का बंटवारा-

1. शक्ति का क्षैतिज वितरण: सत्ता सरकार के विभिन्न अंगों, जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच साझा की जाती है। उदाहरण: भारत।
2. शक्ति का लंबवत वितरण: सत्ता को विभिन्न स्तरों पर सरकार के बीच साझा किया जा सकता है - पूरे देश के लिए एक सामान्य सरकार और प्रांत या क्षेत्रीय स्तर पर सरकारें। उदाहरण: USA और भारत की संघीय प्रणाली,

3. स्थानीय सरकार - धार्मिक और भाषाई समूहों जैसे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच भी सत्ता साझा की जा सकती है। उदाहरण: बेल्जियम में 'सामुदायिक सरकार' और भारत की पंचायती राज व्यवस्था.
4. सत्ता के बंटवारे की व्यवस्था को राजनीतिक दलों, दबाव समूहों और आंदोलनों द्वारा सत्ता में बैठे लोगों को नियंत्रित या प्रभावित करने के तरीके से भी देखा जा सकता है.
5. इन सभी रूपों में सत्ता का बंटवारा करने के पश्चात संघर्ष की संभावना समाप्त होती है.

CLASS 10 : CIVICS (P.S.) IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 2 : FEDERALISM

संघवाद - सरकार की एक प्रणाली है जिसमें सत्ता एक केंद्रीय प्राधिकरण और देश के विभिन्न राज्यों/प्रांतों के बीच विभाजित होती है।

सत्ता साझेदारी ऊर्ध्वाधर मॉडल - सरकारों के विभिन्न स्तरों को संघवाद कहा जाता है।

1. आधुनिक लोकतंत्रों में संघवाद सत्ता-साझाकरण के प्रमुख रूपों में से एक है।
2. एक आदर्श संघीय व्यवस्था के दोनों पहलू होते हैं: आपसी विश्वास और साथ रहने का समझौता।

संघ में सरकार के दो स्तर हैं।

1. केंद्र सरकार: पूरे देश के लिए सरकार जो आम तौर पर सामान्य राष्ट्रीय हित के कुछ विषयों के लिए जिम्मेदार होती है।
2. राज्य सरकार: प्रांतों या राज्यों के स्तर पर जो अपने राज्य के दिन-प्रतिदिन के अधिकांश प्रशासन की देखभाल करते हैं।

संघवाद की प्रमुख विशेषताएँ

1. सरकार के दो या दो से अधिक स्तर.
2. क्षेत्राधिकार - सरकार के विभिन्न स्तर एक ही नागरिक पर शासन करते हैं, जहां कानून, कराधान और प्रशासन के विशिष्ट मामलों में प्रत्येक स्तर का अपना क्षेत्राधिकार होता है।
3. संवैधानिक रूप से गारंटी - सरकार के प्रत्येक स्तर के अस्तित्व और अधिकार की संवैधानिक गारंटी है।
4. संविधान को एकतरफा नहीं बदला जा सकता। ऐसे बदलावों के लिए सरकार के दोनों स्तरों की सहमति की आवश्यकता होती है।
5. न्यायालय अंपायर है - न्यायालयों को संविधान की व्याख्या करने की शक्ति है। यदि विभिन्न स्तरों की सरकारों के बीच कोई विवाद उत्पन्न होता है तो सर्वोच्च न्यायालय अंपायर के रूप में कार्य करता है।
6. सरकार के प्रत्येक स्तर के लिए राजस्व के स्रोत उसकी वित्तीय स्वायत्तता सुनिश्चित करने के लिए निर्दिष्ट किए गए हैं।
7. संघीय प्रणाली के दोहरे उद्देश्य हैं देश की एकता की रक्षा करना और उसे बढ़ावा देना तथा क्षेत्रीय विविधता को समायोजित करना।

संघवाद के प्रकार

A. एक साथ आकर संघ बनाना

1. पहले मार्ग में स्वतंत्र राज्यों को एक बड़ी इकाई बनाने के लिए एक साथ आना शामिल है।
2. सभी घटक राज्यों में आमतौर पर समान शक्ति और मजबूत संघीय सरकार होती है।
3. उदाहरण - संयुक्त राज्य अमेरिका, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया।

B. संघों को एकजुट रखना

1. दूसरा मार्ग वह है जहां एक बड़ा देश अपनी शक्ति को घटक राज्यों और राष्ट्रीय सरकार के बीच विभाजित करने का निर्णय लेता है।
2. उदाहरण - भारत, स्पेन और बेल्जियम
3. केंद्र सरकार अधिक शक्तिशाली होती है।
4. अक्सर महासंघ की विभिन्न घटक इकाइयों के पास असमान शक्तियाँ होती हैं। कुछ इकाइयों को विशेष शक्तियाँ प्रदान की जाती हैं

भारत में संघीय व्यवस्था

1. अनुच्छेद-*1:* इंडिया अर्थात भारत, राज्यों का एक संघ होगा। संविधान भारत को राज्यों का संघ घोषित करता है। भारत संघ के सिद्धांतों पर आधारित है।
2. सरकार के दो या दो से अधिक स्तर। - संविधान में मूल रूप से सरकार की दो-स्तरीय प्रणाली प्रदान की गई थी, तीसरा स्तर बाद में जोड़ा गया
   I. केंद्र II. राज्य III. स्थानीय सरकार
3. क्षेत्राधिकार - सरकार के स्तर समान नागरिकों पर शासन करते हैं, जहां कानून, कराधान और प्रशासन के विशिष्ट मामलों में प्रत्येक स्तर का अपना क्षेत्राधिकार होता है।
4. संवैधानिक रूप से गारंटी - सरकार के प्रत्येक स्तर के अस्तित्व और अधिकार की संवैधानिक गारंटी है।
5. संविधान ने विधायी शक्तियों को तीन सूचियों में वितरित किया:
   I. संघ सूची (97 विषय) – रक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा।
   II. राज्य सूची (66 विषय) - पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई।
   III. समवर्ती सूची (47 विषय) - शिक्षा, वन, व्यापार संघ, विवाह, दत्तक ग्रहण और उत्तराधिकार।
6. संविधान को एकतरफा नहीं बदला जा सकता
7. सुप्रीम कोर्ट - अंपायर
8. वित्तीय स्वायत्तता - भारत का वित्त आयोग

भाषा नीति - भाषाई राज्य

1. जब भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की मांग उठी तो कुछ राष्ट्रीय नेताओं को डर था कि इससे देश का विघटन हो जायेगा।
2. केंद्र सरकार ने कुछ समय तक भाषाई राज्यों का विरोध किया।
3. लेकिन अनुभव से पता चला है कि भाषाई राज्यों के गठन से देश को और अधिक एकजुट बना दिया है। इससे प्रशासन भी आसान हो गया है।

4. कोई राष्ट्रभाषा नहीं - हमारे संविधान ने किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया।
5. भाषाई राज्यों के गठन ने देश को एकजुट किया और प्रशासन को आसान बना दिया
6. हमारे देश के नेताओं ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बहुत सतर्क रवैया अपनाया।
7. 22 भाषाओं को संविधान द्वारा अनुसूचित भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है।
8. राज्यों की भी अपनी आधिकारिक भाषाएँ हैं।
9. सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के साथ अंग्रेजी का भी प्रयोग किया जाता है।

केंद्र-राज्य संबंध

1. केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच सत्ता का बंटवारा संविधान की मूल संरचना है।
2. संसद इस व्यवस्था को एकतरफा नहीं बदल सकती.
3. सरकार के प्रत्येक स्तर को उसकी वित्तीय स्वायत्तता सुनिश्चित करने के लिए निर्दिष्ट किया गया है
4. शक्तियों के विभाजन के संबंध में किसी भी विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णय लेता है।
5. गठबंधन की सरकारें - इससे राज्य सरकारों की स्वायत्तता के प्रति सम्मान और सत्ता-साझाकरण की एक नई संस्कृति को बढ़ावा मिला।
6. केंद्र-राज्य संबंध एक तरीका है जिससे व्यवहार में संघवाद को मजबूत किया गया है।

केंद्र-राज्य संबंध - गठबंधन सरकार

- गठबंधन सरकार - कम से कम दो राजनीतिक दलों के एक साथ आने से बनी सरकार। गठबंधन में भागीदार दल एक राजनीतिक गठबंधन बनाते हैं और एक साझा कार्यक्रम अपनाते हैं। उदाहरण के लिए,
- **Ex**. - राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) BJP, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) INC, वाम मोर्चा, 2023 - I.N.D.I.A.
- 1990 के बाद लोकसभा में किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला, प्रमुख राष्ट्रीय दलों को केंद्र में सरकार बनाने के लिए कई क्षेत्रीय दलों सहित कई दलों के साथ गठबंधन करना पड़ा। इससे सत्ता की साझेदारी और राज्य सरकारों की स्वायत्तता के प्रति सम्मान की एक नई संस्कृति का उदय हुआ।

भारत में विकेंद्रीकरण

परिभाषा - जब केंद्र और राज्य सरकार से शक्ति ली जाती है और स्थानीय सरकार को दी जाती है . इसे विकेंद्रीकरण कहा जाता है। 1992 से पहले, स्थानीय निकाय सीधे राज्य सरकारों के अधीन थे और नियमित चुनाव नहीं होते थे।

- स्थानीय निकायों के पास कोई संसाधन या शक्तियाँ नहीं थीं।
- 1992 के बाद लोकतंत्र के तीसरे स्तर को अधिक शक्तिशाली और प्रभावी बनाने के लिए संविधान में संशोधन किया गया।

1. चुनाव कराना संवैधानिक रूप से अनिवार्य है।
2. सीटें आरक्षित - निर्वाचित निकायों में SC, ST & OBC के लिए सीटें आरक्षित हैं।
3. 33% पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।
4. चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग बनाया.
5. राज्य सरकार को स्थानीय सरकारी निकायों के साथ कुछ शक्तियां और राजस्व साझा करना आवश्यक है।

CLASS 10 : CIVICS (P.S.) IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 3 : GENDER, RELIGION AND CASTE

GENDER AND POLITICS

लिंग विभाजन - समाज में विभिन्न लिंगों के बीच असमानता का वर्णन करता है

- उदाहरण - वेतन, प्रगति, लाभों अवसर की असमानता , राजनीति में प्रतिनिधित्व etc.

श्रम का लैंगिक विभाजन - एक ऐसी व्यवस्था जिसमें घर के अंदर का सारा काम परिवार की महिलाएँ करती हैं।

- जबकि पुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि वे पैसा कमाने के लिए बाहर काम करें।
- यह मान्यता जीव विज्ञान (biology) पर नहीं बल्कि सामाजिक एवं अपेक्षाओं एवं रूढ़ियों पर आधारित है।

नारीवादी आंदोलन - सामाजिक आंदोलन जिनका उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता स्थापित करना है नारीवादी आंदोलन कहलाते हैं.

महिला भेदभाव और उत्पीड़न

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को विभिन्न प्रकार से असुविधा, भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है –

1. निम्न महिला साक्षरता दर : केवल 54%
2. नौकरियाँ : नौकरियों में महिलाओं का प्रतिशत बहुत कम।
3. कम वेतन: समान वेतन अधिनियम के बावजूद, सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है।
4. लिंगानुपात (943) : अधिकांश माता-पिता लड़कों को प्राथमिकता देते हैं इसलिए कन्या भ्रूण हत्या हमारे देश में आम बात है। इसके परिणामस्वरूप लिंगानुपात प्रतिकूल हो गया है।
5. सामाजिक बुराई : समाज महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है।
6. दहेज उत्पीड़न, शारीरिक शोषण, यौन उत्पीड़न रोजमर्रा की कहानियाँ हैं।
7. महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी कम है।

महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व

1. भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी वैश्विक औसत से कम है।
2. भारत में लगभग 10% हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर यह संख्या 19% है।
3. किसी भी विधानसभा में यह कभी भी 5% से अधिक नहीं हुई और लोकसभा में कभी भी 12% से अधिक नहीं हुई।
   संसद में महिला – 78 Lok Sabha & 24 Rajya Sabha

4. पंचायती राज अधिनियम कहता है कि स्थानीय निकायों में सभी सीटों में से एक तिहाई सीटें महिला उम्मीदवारों को दी जानी चाहिए।
5. इसके परिणामस्वरूप नगर पालिकाओं और पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

धर्म सांप्रदायिकता और राजनीति

- धार्मिक मतभेद अक्सर राजनीति के क्षेत्र में व्यक्त किये जाते हैं।
- गांधी जी कहते थे कि धर्म को कभी भी राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता, राजनीति को धार्मिक नैतिकता से निर्देशित होना चाहिए।

साम्प्रदायिकता - अपने ही धर्म के प्रति अत्यधिक एवं पक्षपातपूर्ण लगाव को साम्प्रदायिकता कहा जाता है।

सांप्रदायिक राजनीति

1. सांप्रदायिक सोच धार्मिक समुदाय पर राजनीतिक प्रभुत्व की ओर ले जाती है।
2. धर्म ही समाज के निर्माण का मुख्य आधार बन जाता है।
3. बहुसंख्यकवादी प्रभुत्व - समाज में समस्या तब शुरू होती है जब एक धर्म को दूसरे धर्म के विरुद्ध खड़ा कर दिया जाता है।
4. राजनीतिक लामबंदी - चुनावी राजनीति में अक्सर दूसरों की तुलना में एक धर्म के मतदाताओं के हितों या भावनाओं का ध्यान रखा जाता है. (Vote Bank)
5. समस्या तब बहुत गंभीर हो जाती है जब सरकार अपनी शक्ति का प्रयोग केवल एक धार्मिक समूह की मांगों को पूरा करने के लिए करती है।
6. कभी-कभी सांप्रदायिकता सांप्रदायिक हिंसा, दंगों और नरसंहार का सबसे घिनौना रूप धारण कर लेती है।
7. राजनीति में धर्म का इस प्रकार प्रयोग करना साम्प्रदायिक राजनीति कहलाती है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य - भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है।

1. भारत में कोई आधिकारिक धर्म या राजकीय धर्म नहीं है। हमारा संविधान किसी भी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देता है।
2. हर कोई किसी भी धर्म का पालन करने, मानने और उसकी संपत्ति बनाने के लिए स्वतंत्र है।
3. संविधान धर्म के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाता है.
4. धार्मिक समुदायों के भीतर समानता सुनिश्चित करने के लिए संविधान राज्य को धर्म के मामलों में हस्तक्षेप करने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, यह अस्पृश्यता पर प्रतिबंध लगाता है।
5. धर्मनिरपेक्षता का विचार हमारे देश की नींव में से एक है।

जाति और राजनीति -

जातिगत असमानता - जाति और राजनीति, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं

जातिगत असमानता

1. अधिकांश समाजों में व्यवसाय एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होते हैं। जाति प्रथा इसी का चरम रूप है।
2. वर्ण व्यवस्था - जाति व्यवस्था बहिष्कार और भेदभाव पर आधारित है।
3. सामाजिक असमानता - जातिगत असमानता एक प्रकार की सामाजिक असमानता है जिसमें लोगों के साथ जाति के आधार पर भेदभाव किया जाता है।
4. जातिगत असमानता वंशानुगत और पृथक्करण दोनों है।
5. जातिगत असमानता का सबसे हानिकारक पहलू अस्पृश्यता की प्रथा है।
6. अधिकांश लोग अपनी ही जाति या जनजाति में विवाह करना पसंद करते हैं और अन्य जाति समूहों के सदस्यों के साथ खाना खाना पसंद नहीं करते हैं।

राजनीति में जाति - राजनीति में जाति के कई रूप होते हैं

1. जब राजनीतिक दल अपने उम्मीदवार चुनते हैं या सरकार बनाते हैं, तो वे आम तौर पर यह सुनिश्चित करते हैं कि कई जातियों और जनजातियों के सदस्य शामिल हों।
2. चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक दल और राजनेता जातीय भावना की दुहाई देते हैं।
3. राजनीतिक समर्थन प्राप्त करने के लिए राजनीतिक दल चुनावों के दौरान जाति-आधारित मुद्दों पर जोर देते हैं,
4. वोट बैंक - 'एक व्यक्ति, एक वोट' प्रणाली या वयस्क मताधिकार ने मतदाता को अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया है।
5. राजनीतिक दलों के परिणामस्वरूप निचली जातियों के लोग अपने मतदान अधिकारों और प्रभाव के प्रति अधिक जागरूक हो गए हैं।

जाति में राजनीति- यहां कुछ उदाहरण दिए हैं।

1. जाति व्यवस्था और जाति की पहचान भी राजनीति से प्रभावित होती है क्योंकि उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में लाया जाता है।
2. प्रत्येक जाति पड़ोसी जातियों या उप-जातियों को समाहित करके आकार में वृद्धि करने की आकांक्षा रखती है.
3. विभिन्न जाति समूह बनते हैं, और फिर वे अन्य जातियों या समुदायों के साथ संचार और बातचीत में संलग्न होते हैं ताकी राजनीतिक ताकत पा सके.
4. राजनीतिक क्षेत्र में नए जाति समूह उभरे हैं, जैसे 'पिछड़े' और 'अगड़े' जाति समूह।
5. जाति विभाजन कुछ परिस्थितियों में तनाव, संघर्ष और यहां तक कि हिंसा को भी जन्म दे सकता है।
6. परिणामस्वरूप, जाति राजनीति में विभिन्न प्रकार के कार्य निभाती है।

CLASS 10 : CIVICS (P.S.) IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 4 : POLITICAL PARTIES

राजनीतिक दल - यह लोगों का एक समूह है, जो चुनाव लड़ने और सरकार में सत्ता हासिल करने के लिए एक साथ आते हैं।
राजनीतिक दल के घटक:- 1.नेता, 2.सक्रिय सदस्य, 3.अनुयायी
राजनीतिक दलों की आवश्यकता:-

1. लोकतंत्र को कायम रखना है.
2. अनेकता में एकता बनाय रखना.
3. सरकार को विभिन्न माध्यमों से जाँच करना।
4. सरकार और जनता के बीच संबंध.

राजनीतिक दलों के कार्य

1. पार्टियाँ चुनाव लड़ती हैं- USA में किसी पार्टी के सदस्य और समर्थक अपने उम्मीदवारों को चुनते हैं, जबकि भारत में, पार्टी के नेता उम्मीदवारों को चुनते हैं।
2. पार्टियाँ अलग-अलग नीतियाँ और कार्यक्रम सामने रखती हैं।
3. किसी देश के लिए कानून बनाने में पार्टियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं।
4. पार्टियाँ सरकार बनाती हैं और चलाती हैं।
5. हारी हुई पार्टियाँ विपक्ष की भूमिका निभाती हैं।'
6. पार्टियाँ जनता की राय को आकार देती हैं।
7. पार्टियाँ लोगों को सरकारी मशीनरी और सरकारों द्वारा कार्यान्वित कल्याणकारी योजनाओं तक पहुँच प्रदान करती हैं।

कितनी पार्टियाँ होनी चाहिए? - दलीय व्यवस्था तीन प्रकार की होती है...
एकदलीय प्रणाली –

1. केवल एक ही पार्टी को सरकार को नियंत्रित करने और चलाने की अनुमति है।
2. चुनावी प्रणाली सत्ता के लिए स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं देती है। उदाहरण के लिए- चीन (केवल कम्युनिस्ट पार्टी)।

दो दलीय प्रणाली

1. सत्ता 2 मुख्य पार्टियों के बीच बदलती रहती है।
2. कई पार्टियाँ अस्तित्व में हो सकती हैं और उनके पास राज्य विधान में सीटें हो सकती हैं लेकिन केवल दो मुख्य पार्टियाँ ही बहुमत हासिल करती हैं। उदाहरण के लिए- USA (रिपब्लिक पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी)

बहुदलीय प्रणाली – कई पार्टियाँ सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, और दो से अधिक पार्टियों के पास अपने बल पर या दूसरों के साथ गठबंधन करके सत्ता में आने की उचित संभावना है।
गठबंधन (मोर्चा) - दो से अधिक दल अपने दम पर या गठबंधन में सत्ता में आ सकते हैं। उदाहरण- NDA, UPA और अब - I.N.D.I.A.
राष्ट्रीय राजनीतिक दल -

- लोकसभा में 6% वोट और 4 सांसद - एक पार्टी जो लोकसभा चुनाव में कुल वोटों का कम से कम छह प्रतिशत हासिल करती है और लोकसभा में कम से कम चार सीटें जीतती है।

  या
- 4 राज्यों और 4 लोकसभा में 6% वोट - एक पार्टी जो चार राज्यों में विधानसभा चुनावों में कुल वोटों का कम से कम छह प्रतिशत वोट हासिल करती है और लोकसभा में कम से कम चार सीटें जीतती है।

सभी राष्ट्रीय स्तर पर तय की गई समान नीतियों और कार्यक्रमों का पालन करते हैं।
राज्य के राजनीतिक दल:- 6% वोट और 2 विधायक - एक पार्टी जो किसी राज्य की विधान सभा के चुनाव में कुल वोटों का कम से कम छह प्रतिशत वोट हासिल करती है और कम से कम दो सीटें जीतती है, उसे राज्य पार्टी के रूप में मान्यता दी जाती है।
राजनीतिक दल - कुल 6 नेशनल लेवल की पार्टियां हैं। (As on April,2023)

1. भारतीय जनता पार्टी *(भाजपा)* *2.* कांग्रेस *3.* बहुजन समाज पार्टी *(बीएसपी)* *4.* कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया *(मार्क्सवादी)*
5. नेशनल पीपुल्स पार्टी *(NPP)* *6.* आम आदमी पार्टी *(AAP),2011*

- भारत निर्वाचन आयोग ने आदेश जारी करते हुए राष्ट्रीय पार्टियों की घोषणा की।आयोग ने आम आदमी पार्टी (आप) को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दिया। हालांकि, आयोग ने अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (AITC), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) का राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा वापस ले लिया है।

राजनीतिक दलों में चुनौतियाँ

1. पार्टी के अंदर आंतरिक लोकतंत्र कमी 2. वंशवाद की चुनौती 3. पार्टियों में धनबल (पैसा) की चुनौती.
4. पार्टियों में बाहुबल (अपराधी तत्व). 5. विकल्पहीनता - मतदाताओं के पास सार्थक विकल्प का अभाव।
6. दल-बदल - नेता एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाते हैं तो पार्टियाँ अस्थिर होती हैं.

राजनीतिक दलों में सुधार

1. पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र के लिए कानून। 2. वंशवाद का अंत
3. State Funding - पार्टियों का चुनाव का खर्च सरकार उठाएँ
4. राजनीतिक दलों को अपना आयकर रिटर्न दाखिल करना चाहिए।
5. महिलाओं के लिए आरक्षण (कम से कम 1/3), सार्वजनिक भागीदारी का स्तर बढ़ाएँ।
6. शपथ पत्र - उम्मीदवारों को अपनी संपत्ति और उनके खिलाफ लंबित आपराधिक मामलों का विवरण देते हुए हलफनामा दाखिल करना होगा।
7. दल-बदल - यदी चुनाव के बाद कोई पार्टी बदलता है तो उसकी सदस्यता (MP, MLA) रद्द हो.

CLASS 10 : CIVICS (P.S.) IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 5 : OUTCOME OF DEMOCRACY

लोकतंत्र के परिणाम का मूल्यांकन कैसे करें - एक लोकतांत्रिक व्यवस्था..

1. नागरिकों के बीच समानता को बढ़ावा 2. व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है; 3. निर्णय लेने की गुणवत्ता में सुधार;
4. संघर्षों को सुलझाने का एक तरीका 5. गलतियों को सुधारने की गुंजाइश

- एक लोकतांत्रिक सरकार को किसी निर्णय पर पहुंचने से पहले प्रक्रियाओं का पालन करने में अधिक समय लगेगा।
- क्योंकि इसने प्रक्रियाओं का पालन किया है, इसके निर्णय लोगों के लिए अधिक स्वीकार्य और अधिक प्रभावी दोनों हो सकते हैं।

जवाबदेह सरकार

1. जवाबदेह सरकार अपने नागरिकों के प्रति जवाबदेह होती है।
2. सभी फैसले नागरिकों के लिए जाते हैं.
3. निर्णय लेने, वित्तीय प्रबंधन और सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में पारदर्शिता।
4. स्वस्थ लोकतंत्र और सुशासन के लिए जवाबदेह सरकार आवश्यक है।
5. नागरिकों को आरटीआई के माध्यम से निर्णय लेने की प्रक्रिया का मूल्यांकन करने का भी अधिकार है।

उत्तरदायी सरकार

1. लोकतंत्र लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति बहुत जिम्मेदार है।
2. यह जनता की राय, नागरिकों की जरूरतों और अपेक्षाओं के निर्माण को बढ़ावा देता है।
3. कोई भी निर्णय लेने या किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले उचित विचार-विमर्श और बातचीत होती है।

वैध सरकार में

1. सरकारें नियमित, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से चुनी जाती हैं।
2. कानून जनता के प्रतिनिधियों के साथ काफी चर्चा के बाद उचित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए बनाए जाते हैं।
3. लोग न्यायपालिका में कानूनों और नीतियों को चुनौती दे सकते हैं
4. निर्णय लेने में पारदर्शिता.
5. नियमित सार्वजनिक बहस और चर्चा।

आर्थिक सवृद्धि और विकास

आर्थिक सवृद्धि - पिछले वर्ष की तुलना में अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने की अर्थव्यवस्था की क्षमता में वृद्धि है। इसकी गणना किसी देश की जीडीपी में प्रतिशत वृद्धि के रूप में की जा सकती है।

आर्थिक विकास - वह प्रक्रिया है जिसमें एक अर्थव्यवस्था अपने लोगों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भलाई में सुधार करने का लगातार प्रयास करती है। इसका उद्देश्य अपने लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना है।

- 1950 और 2000 के बीच, तानाशाही शासनों की आर्थिक विकास दर थोड़ी अधिक थी।

आर्थिक वृद्धि विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है:

1. किसी देश की जनसंख्या का आकार
2. वैश्विक स्थिति
3. अन्य देशों से सहयोग
4. देश द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियां

असमानता और गरीबी में कमी - निम्नलिखित तरीकों से, लोकतंत्र असमानता और गरीबी को कम करने में सक्षम रहा है:

1. लोकतंत्र लोगों को समान अधिकार देता है;
2. लोकतंत्र लिंग, धर्म, रंग, जाति आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करता है।
3. शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देने वाली नीतियों को लागू करके।
4. सरकार सभी नागरिकों के लिए अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज बनाने में मदद कर सकती है.
5. सरकारें कर और लाभ प्रणाली के माध्यम से समानता को बढ़ावा देने और असमानता और गरीबी को कम करने के लिए हस्तक्षेप कर सकती हैं।
6. कम आय वाले लोगों को कल्याणकारी लाभ

लोकतंत्र में असमानता और गरीबी को कम करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो इन मुद्दों के मूल कारणों का समाधान करे।

सामाजिक विविधता का सामंजस्य

1. लोकतंत्र विभिन्न सामाजिक विभाजनों को समायोजित करके अपने नागरिकों को शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने में मदद करता है।
2. यह समझना आवश्यक है कि लोकतंत्र केवल बहुमत की राय से शासन नहीं है।
3. बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की राय स्थायी नहीं होती.
4. बहुमत का शासन धर्म या नस्ल या भाषाई समूह आदि के आधार पर बहुसंख्यक समुदाय का शासन न बन जाये।
5. ऐसा तब होता है जब विभिन्न प्रकार के सामाजिक विभाजनों को समायोजित किया जाता है।
6. भारत और बेल्जियम ऐसे देश हैं जो सामाजिक विविधता के समायोजन के उदाहरण हैं।

नागरिकों की गरिमा और आज़ादी

1. लोकतांत्रिक सरकार व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है।
2. प्रत्येक व्यक्ति सम्मान पाना चाहता है।
3. सभी व्यक्ति समान हैं
4. महिलाओं का सम्मान और समान व्यवहार।
5. लोगों को अभिव्यक्ति की आजादी
6. लोगों अपेक्षाएँ और शिकायतें स्वयं लोकतंत्र की सफलता का प्रमाण हैं।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

CLASS 10 : - ECONOMICS IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 01 : DEVELOPMENT

विकास क्या वादा करता है - विभिन लोग, विभिन्न लक्ष्य

1. विकास व्यक्ति की कुल आय और जीवन स्तर को बढ़ाकर वास्तविक विकास का वादा करता है.
2. विकास लक्ष्य हर व्यक्ति के हिसाब से अलग-अलग होते हैं।
3. एक व्यक्ति का विकास दूसरे व्यक्ति के लिए विकास नहीं हो सकता। यह दूसरे के लिए विनाशकारी भी हो सकता है।
4. विभिन्न लोग रोजगार के अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं, सुरक्षा और सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता आदि चाहते हैं।
5. उदाहरण के लिए, एक अमीर शहरी परिवार की लड़की को अपने भाई के समान ही स्वतंत्रता मिलती है और वह स्वयं निर्णय लेती है कि उसे जीवन में क्या करना है। वह विदेश में अपनी पढ़ाई करने में सक्षम है।

आय और अन्य लक्ष्य

1. लोग अपने जीवन की दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक आय अर्जित करना पसंद करते हैं, दूसरे शब्दों में, वे अधिक आय चाहते हैं।
2. अधिक आय की चाहत के अलावा, किसी न किसी तरह, लोग समान व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों का सम्मान जैसी चीजें भी चाहते हैं।
3. कंपनियाँ धन जैसी भौतिक वस्तुएँ प्रदान करती हैं। लेकिन लोग स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों का सम्मान जैसी गैर-भौतिक चीजें भी चाहते हैं।
4. कुछ कंपनियाँ कम वेतन देती हैं लेकिन नियमित रोज़गार देती हैं जिससे समझदारी बढ़ती है।
5. दूसरे मामले में, कुछ कंपनियां उच्च वेतन तो देती हैं लेकिन नौकरी की कोई प्रतिभूति नहीं देतीं। वे प्रतिभूतियों की भावना को कम करते हैं।
6. इसी प्रकार, विकास के लिए, लोग लक्ष्यों का मिश्रण देखते हैं

औसत आय - औसत आय देश की कुल आय को उसकी कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर प्राप्त संख्या है। इसे प्रति व्यक्ति आय भी कहा जाता है।

- औसत आय = देश की कुल आय / देश की कुल जनसंख्या
- विश्व विकास रिपोर्ट में, देशों को वर्गीकृत करने में प्रति व्यक्ति आय का उपयोग किया जाता है।
- जिन देशों की प्रति व्यक्ति आय 2017 में 12,056 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष और उससे अधिक है, उन्हें अमीर देश कहा जाता है।
- जिन देशों की प्रति व्यक्ति आय 955 अमेरिकी डॉलर या उससे कम है उन्हें निम्न आय वाले देश कहा जाता है। जैसे: भारत.

राष्ट्रीय विकास

1. राष्ट्रीय विकास से तात्पर्य किसी राष्ट्र की अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करने की क्षमता से है।
2. नागरिकों का जीवन स्तर निर्भर करता है
   - प्रति व्यक्ति आय,
   - सकल घरेलू उत्पाद,
   - साक्षरता दर और –
   - स्वास्थ्य आदि की उपलब्धता।
3. इन कारकों को भी सुधार का पैमाना माना जाता है.

विभिन्न देशों या राज्यों की तुलना कैसे करें?

1. हम प्रति व्यक्ति आय के आधार पर विभिन्न देशों या राज्यों की तुलना कर सकते हैं।
2. हम विभिन्न देशों की तुलना के लिए राष्ट्रीय आय नहीं ले सकते क्योंकि प्रत्येक देश की जनसंख्या दर अलग-अलग है।
3. प्रति व्यक्ति आय की गणना किसी देश की कुल आय को विशेष देश की कुल जनसंख्या से विभाजित करके की जाती है।
4. किसी देश की प्रति व्यक्ति आय उस देश विशेष के नागरिकों के जीवन स्तर को दर्शाती है।
5. उच्च प्रति व्यक्ति आय वाला देश कम प्रति व्यक्ति आय वाले अन्य देशों की तुलना में अधिक विकसित होता है।

आय और अन्य मानदंड

1. लोग अपने विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए न केवल बेहतर आय चाहते हैं, बल्कि वे स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों का सम्मान जैसी गैर-भौतिक चीजें भी चाहते हैं।
2. किसी राष्ट्र के विकास के लिए औसत आय या प्रति व्यक्ति आय की आवश्यकता होती है।
3. चयनित राज्यों की प्रति व्यक्ति आय यदि प्रति व्यक्ति आय को विकास के माप के रूप में उपयोग किया जाए, तो हरियाणा को सबसे विकसित और बिहार को तीनों में से सबसे कम विकसित राज्य माना जाएगा।
4. हरियाणा में आय का स्तर अधिक है लेकिन केरल में स्वास्थ्य और शिक्षा बेहतर है। (See Table 1.4 in book)
5. विभिन्न लोग रोजगार के अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं, सुरक्षा और सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता आदि चाहते हैं।

IMPORTANT TERMS

1. शिशु मृत्यु दर (या आईएमआर) - उस विशेष वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों के अनुपात के रूप में एक वर्ष की आयु से पहले मरने वाले बच्चों की संख्या को इंगित करता है।

2. साक्षरता दर - 7 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग में साक्षर जनसंख्या के अनुपात को मापती है।
3. निवल उपस्थिति अनुपात - 14 और 15 वर्ष की आयु वर्ग के स्कूल जाने वाले बच्चों की कुल संख्या है, जो समान आयु वर्ग के बच्चों की कुल संख्या का प्रतिशत है।

BODY MASS INDEX (शरीर द्रव्यमान सुचकांक) : बीएमआई - शरीर द्रव्यमान सुचकांक - यह पता लगाने का एक तरीका है कि वयस्क अल्पपोषित हैं या नहीं,

बॉडी मास इंडेक्स की गणना-

$$BMI = \frac{\text{Weight (in kilograms)}}{\text{Height}^2 \text{ (in meters)}}$$

1. किसी व्यक्ति के वजन (किलो में) को ऊंचाई के वर्ग (मीटर में) से विभाजित करें।
2. यदि यह आंकड़ा 18.5 से कम है तो व्यक्ति को कुपोषित माना जाएगा।
3. यदि यह बीएमआई 25 से अधिक है, तो व्यक्ति अधिक वजन वाला है।

मानव विकास सूचकांक

1. यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा तैयार किया गया एक समग्र सूचकांक है।
2. इसकी वार्षिक मानव विकास रिपोर्ट हर साल प्रकाशित होती है।
3. प्रमुख पैरामीटर
   I. जीवन प्रत्याशा.
   II. प्रति व्यक्ति आय,
   III. साक्षरता का स्तर
4. देशों के विकास को मापने के लिए उपयोग किया जाता है।
5. विश्व के देशों को तदनुसार अत्यंत उच्च विकसित देश, उच्च विकसित देश, मध्यम विकसित देश और निम्न विकसित देश में स्थान दिया गया है।
6. पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब उल-हक द्वारा विकसित।

सार्वजनिक सुविधाएं

1. सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं को सार्वजनिक सुविधा माना जाता है जैसे स्कूल, अस्पताल, सामुदायिक भवन, परिवहन, बिजली आदि।
2. जैसा कि हम जानते हैं कि पंजाब में केरल के औसत व्यक्ति की तुलना में अधिक आय है.
3. सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसी बेहतर सार्वजनिक प्रणाली के कारण केरल में शिशु मृत्यु दर कम है, जो राज्य को स्वास्थ्य और पोषण संबंधी स्थिति प्रदान करती है।
4. हमें सार्वजनिक सुविधा की आवश्यकता है क्योंकि हम पैसे से सभी चीजें खरीदने में सक्षम नहीं हैं।
5. हम पैसे के बल पर प्रदूषण मुक्त वातावरण नहीं खरीद सकते।

विकास की धारणीयता

1. इसका अर्थ है पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना विकास।
2. यह विकास की वह प्रक्रिया है जो भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करती है।
3. सतत विकास का तात्पर्य मानव के विकास के साथ-साथ प्राकृतिक प्रणाली की क्षमता को बनाए रखना है।
4. सतत विकास के लिए, हमें गैर-नवीकरणीय संसाधनों जैसे कार्बन आधारित मूल रूप से डिज़ाइन किए गए ईंधन का उपयोग उतनी मात्रा में करना होगा जितनी हमें आवश्यकता है।
5. भूजल जैसे कुछ नवीकरणीय संसाधनों को पुनः भरने में लंबा समय लगेगा। इसलिए, हम उस संसाधन का उपयोग सीमित मात्रा में करते हैं।
6. हमने विश्व को अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं किया है हमने इसे अपने बच्चों से उधार लिया है।

CLASS 10 : ECONOMICS IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 02 : SECTORS OF THE INDIAN ECONOMY

आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र - आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र - वे गतिविधियाँ जो कुछ आय उत्पन्न करती हैं, आर्थिक गतिविधियों के रूप में जानी जाती हैं।

आर्थिक गतिविधियाँ

1. प्राथमिक क्षेत्र: खेती, पशुपालन, खनन गतिविधियों से संबंधित।
2. द्वितीयक क्षेत्र: विनिर्माण, उद्योगों से संबंधित।
3. तृतीयक क्षेत्र: अन्य दो क्षेत्रों को सहायता प्रदान करना। ये गतिविधियाँ वस्तुओं के बजाय सेवाएँ उत्पन्न करती हैं, तृतीयक क्षेत्र को सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है।

सकल घरेलू उत्पाद

परिभाषा - किसी विशेष वर्ष के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य उस वर्ष के लिए क्षेत्र का कुल उत्पादन प्रदान करता है। और तीनों क्षेत्रों में उत्पादन का योग किसी देश का सकल घरेलू उत्पाद *(जीडीपी)* कहलाता है।

- यह किसी विशेष वर्ष के दौरान किसी देश के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है। जीडीपी से पता चलता है कि अर्थव्यवस्था कितनी बड़ी है.
- मध्यवर्ती वस्तुओं का उपयोग अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में किया जाता है। अंतिम वस्तुओं के मूल्य में पहले से ही उन सभी मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य शामिल होता है जिनका उपयोग अंतिम वस्तु बनाने में किया जाता है।
- चूँकि तीनों क्षेत्रों में हजारों आर्थिक गतिविधियाँ चल रही हैं, इसलिए ऐसी प्रत्येक गतिविधियों का हिसाब रखना लगभग असंभव हो जाता है।
- हम केवल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की जाँच करते हैं।

क्षेत्रको में ऐतिहासिक परिवर्तन

1. विकास के प्रारंभिक चरणों में, प्राथमिक क्षेत्र किसी देश में आर्थिक गतिविधि का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था।
2. खेती के तरीकों में नवीनता के साथ, कृषि क्षेत्र पहले की तुलना में बहुत अधिक भोजन का उत्पादन करने लगा।
3. लोग उद्योगों में काम करने लगे, कुछ लोग परिवहन में भी शामिल हो गये।
4. धीरे-धीरे द्वितीयक क्षेत्र अर्थव्यवस्था और रोजगार उपलब्ध कराने में सबसे महत्वपूर्ण बन गया।
5. खाद्य प्रसंस्करण, उपकरण निर्माण, कपड़ा उद्योग से संबंधित विभिन्न उद्योग बड़ी संख्या में आ रहे हैं।
6. इससे बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सेवाओं की शुरुआत हुई।
7. सेवा क्षेत्र कुल उत्पादन के मामले में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है और इसने अधिक लोगों को रोजगार देना शुरू कर दिया है।

अधिकांश लोग कहाँ कार्यरत हैं?

1973-74 के दौरान देश की जीडीपी

- प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 40% था
- द्वितीयक क्षेत्र का योगदान केवल 12% और तृतीयक क्षेत्र का योगदान 48% है।
- रोजगार प्रतिशत 1972-73 की अवधि के दौरान, भारत के 74% लोग प्राथमिक क्षेत्र में लगे हुए थे जबकि केवल 15% तृतीयक क्षेत्र में लगे हुए थे।

2013-14 में देश की जीडीपी

- तृतीयक क्षेत्र का योगदान प्रतिशत बढ़कर 67% तक पहुंच गया.
- प्राथमिक क्षेत्र घटकर केवल 12% रह गया।
- 2011-12 के दौरान प्राथमिक क्षेत्र सबसे बड़ा नियोक्ता (employer 44%) बना रहा।

प्रच्छन्न बेरोजगारी - आवश्यकता से अधिक लोग कृषि कार्य में लगे।

1. इस प्रकार की अल्परोज़गार किसी ऐसे व्यक्ति के विपरीत छिपी हुई है जिसके पास नौकरी नहीं है और वह स्पष्ट रूप से बेरोजगार के रूप में दिखाई देता है। इसलिए इसे प्रच्छन्न बेरोजगारी भी कहा जाता है।
2. प्रच्छन्न बेरोजगारी वह बेरोजगारी है जो कुल आर्थिक उत्पादन को प्रभावित नहीं करती है। यह तब होता है जब उत्पादकता कम होती है और बहुत सारे कर्मचारी बहुत कम नौकरियो में भरे रहे होते हैं।

रोजगार कैसे पैदा करें?

1. कम ब्याज दर पर ऋण देना
2. उपयुक्त स्थान पर बांध बनाने जैसे बुनियादी ढांचे में निवेश करना।
3. परिवहन एवं भण्डारण की दक्षता बढ़ाना।
4. मिलों, शहद संग्रह केंद्रों जैसे लघु उद्योगों को बढ़ावा देना।
5. शिक्षा एवं प्रशिक्षण केंद्र पर जोर.
6. किसी क्षेत्र की क्षमता की पहचान करना। उदाहरण के लिए, किसी क्षेत्र को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।
7. सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ जैसे खेतों के पास कुआँ या पंप बनाना, बिजली उपलब्ध कराना, अस्पताल बनाना।

मनरेगा, 2005 - मनरेगा - भारत में केंद्र सरकार ने काम के अधिकार को लागू करने वाला एक कानून बनाया जिसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 कहा जाता है.

1. मनरेगा 2005 के नाम से जाना जाता है।
2. मनरेगा 2005 के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार

3. सरकार द्वारा एक वर्ष में 100 दिनों के रोजगार की गारंटी दी जाती है।
4. यदि सरकार रोजगार देने के अपने कर्तव्य में विफल रहती है तो वह लोगों को बेरोजगारी भत्ता देगी

संगठित क्षेत्र और असंगठित क्षेत्र

संगठित क्षेत्र - यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां रोजगार की शर्तें निश्चित और नियमित होती हैं और कर्मचारियों को सुनिश्चित काम मिलता है।

1. नौकरी नियमित होतीं है.
2. काम के घंटे निश्चित हैं.
3. यदि लोग अधिक काम करते हैं, तो उन्हें नियोक्ता द्वारा ओवरटाइम के लिए भुगतान मिलता है।
4. श्रमिक रोजगार की सुरक्षा का आनंद लेते हैं।
5. कर्मचारियों को मेडिकल, BIMA और कई अन्य लाभ मिलेंगे।
6. उदाहरण: सरकारी कर्मचारी, पंजीकृत औद्योगिक श्रमिक, आदि।

असंगठित क्षेत्र - की विशेषता छोटी और बिखरी हुई इकाइयाँ हैं, जो काफी हद तक सरकार के नियंत्रण से बाहर हैं।

1. नौकरियाँ नियमित नहीं होतीं है।
2. नौकरियाँ कम वेतन वाली होती हैं
3. काम के घंटे तय नहीं.
4. ओवरटाइम काम के लिए कोई लाभ नहीं.
5. रोजगार सुरक्षित नहीं है.
6. कर्मचारियों को मेडिकल, BIMA और कई अन्य लाभ नहीं मिलेंगे।
7. उदाहरण: दुकानदारी, खेती, घरेलू काम आदि

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सुरक्षा कैसे दे**.?**

1. सरकार को न्यूनतम वेतन निर्धारित करना चाहिए.
2. असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सरकार ऋण दे.
3. सरकार द्वारा स्व-रोज़गार की सहायता – S.H.G
4. सरकार को भोजन, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी आवश्यकताएँ प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।

सार्वजनिक क्षेत्र**:**

- सरकार अधिकांश संपत्तियों की मालिक है और सभी सेवाएँ प्रदान करती है।
- उदाहरण: रेलवे या डाकघर

निजी क्षेत्र**:**

- संपत्तियों का स्वामित्व और सेवाओं की डिलीवरी निजी व्यक्तियों या कंपनियों के हाथों में है।
- उदाहरण: टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड (टिस्को) या रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल)

CLASS 10 : ECONOMICS IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 03 : MONEY AND CREDIT

मुद्रा विनिमय का एक माध्यममुद्रा विनिमय का एक माध्यम

- मुद्रा - कोई भी वस्तु जिसे विनिमय (exchange) के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है, मुद्रा कहलाती है।
- मुद्रा विनिमय का एक माध्यम है.
- मुद्रा विनिमय प्रक्रिया में मध्यवर्ती (intermediate) के रूप में कार्य करती है, इसे विनिमय का माध्यम कहा जाता है।
- मुद्रा - मुद्रा के आधुनिक रूपों में - कागज के नोट और सिक्के शामिल हैं।
- तथ्य - भारतीय रिजर्व बैंक केंद्र सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है।

वस्तु-विनिमय प्रणाली - धन के प्रयोग के बिना वस्तुओं का विनिमय करना।

बैंकों में निक्षेप

- लोग बैंक में खाता खुलवाते हैं और अपना अतिरिक्त पैसा बैंक में जमा करते हैं।
- बैंक जमा स्वीकार करते हैं और जमा पर ब्याज देते हैं।
- जरूरत पड़ने पर लोग अपना पैसा निकाल लेते हैं।
- जिस भुगतानकर्ता का बैंक में खाता है, वह एक विशिष्ट राशि का चेक बनाता है।
- चेक -चेक भुगतान के साधन के रूप में काम करता है जो कागज का है।
- कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को नकद के बजाय सीधे चेक के माध्यम से धन हस्तांतरित (transfer) कर सकता है।
- भारत में, बैंक अब अपनी जमा राशि का लगभग 15% नकद में रखते हैं।

ऋण की शर्तें - क्रेडिट/ साख - दो पक्षों के बीच पैसे उधार लेने और उधार देने की गतिविधि।

क्रेडिट की शर्तें

1. ऋण का आधार - गिरवी रखने के लिए, 2. ब्याज दर, 3. दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता. 4. पुनर्भुगतान का तरीका.
5. समय अवधि

ऋण का महत्व-

1. कार्यशील पूंजी उत्पादन की आवश्यकता है।
2. चल रहे उत्पादन के खर्चों के लिए.
3. समय पर उत्पादन पूरा करने के लिए.
4. कमाई बढ़ाने में मदद के लिए.

साख के प्रकार - **A.** औपचारिक ऋण

1. बैंकों और सहकारी समितियों से ऋण।
2. RBI औपचारिक क्षेत्र के ऋणों की निगरानी करता है।
3. ब्याज दर कम है.
4. अधिकांश अमीर परिवारों को मिलता है।

B. अनौपचारिक ऋण

1. साहूकारों, रिश्तेदारों आदि से
2. ऋणे निगरानी के लिए कोई कानूनी संस्था नहीं
3. ब्याज दर ऊंची है.
4. अधिकांश गरीब परिवारों को मिलता है

ऋण जाल - जब ऋण उधारकर्ताओं को ऐसी स्थिति में धकेल देता है जिससे उबरना बहुत दर्दनाक होता है।

आरबीआई के कार्य

1. RBI ऋण के औपचारिक स्रोतों के कामकाज की निगरानी करता है।
2. RBI इस बात की निगरानी करता है कि बैंक नकदी संतुलन बनाए रखें।
3. RBI देखता है कि बैंक न केवल मुनाफा कमाने वाले व्यापारियों को बल्कि छोटे किसानों, लघु उद्योगों आदि को भी ऋण दे.
4. RBI समय-समय पर यह जानकारी देने को कहता है कि बैंक किसे कितना कर्ज दे रहे हैं और किस दर पर ब्याज दे रहे हैं।
5. RBI केंद्र सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है।
6. RBI बैंकों का बैंक है।

स्वयं सहायता समूह - SHG गरीब लोगों के छोटे समूह हैं जो अपने सदस्यों को छोटी मात्रा में पैसे बचाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

1. एक SHG में 15 - 20 सदस्य होते हैं
2. गरीब सदस्यों को ऋण उपलब्ध कराना
3. स्वरोजगार सृजन
4. लोन के लिए दस्तावेज की जरूरत नहीं
5. महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं।
6. समूह की नियमित बैठकें विभिन्न सामाजिक मुद्दों जैसे स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा आदि पर चर्चा और कार्य करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

बांग्लादेश ग्रामीण बैंक**, 1971**

1. मुहम्मद यूनुस द्वारा स्थापित,
2. यह बैंक गरीबों को ऋण प्रदान करता है

CLASS 10 : ECONOMICS IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 04 GLOBALISATION AND THE INDIAN ECONOMY

बोर्ड परीक्षा में मूल्यांकन किया जाना है:

1. वैश्वीकरण क्या है?
2. वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक

वैश्वीकरण का तात्पर्य वैश्विक अर्थव्यवस्था, उद्योग, बाजार, संस्कृति के एकीकरण से है।

इसमें शामिल है.

1. व्यापार - विदेशी व्यापार में वृद्धि
2. नई प्रौद्योगिकी - उत्पादन की तकनीकों का निर्यात और आयात।
3. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) - एक देश से दूसरे देश में पूंजी और वित्त का प्रवाह
4. लोगों का एक देश से दूसरे देश में जाना।
5. वैश्वीकरण प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ प्रमुख भूमिका निभा रही हैं।

बहुराष्ट्रीय निगम/कंपनियाँ **(MNC)** - वह निगम जो एक से अधिक देशों में उत्पादन का स्वामित्व या नियंत्रण करता है।

वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारक-

1. प्रौद्योगिकी - संचार प्रौद्योगिकी में तेजी से सुधार ने वैश्वीकरण प्रक्रिया को सक्षम किया है।
2. आर्थिक उदारीकरण: विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश नीतियों के उदारीकरण ने वैश्वीकरण को सक्षम बनाया है।
3. बढ़ती बहुराष्ट्रीय कंपनियों (MNCs) ने वैश्वीकरण को सक्षम बनाया।
4. सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने वैश्वीकरण को सक्षम बनाया है।
5. सूचना प्रौद्योगिकी (IT) ने सेवाओं के उत्पादन को फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।
6. तेज़ परिवहन ने वैश्वीकरण प्रक्रिया को सक्षम किया है।
7. बाज़ार एकीकरण वैश्वीकरण प्रक्रिया को सक्षम किया है।

विदेश व्यापार और विदेशी निवेश नीति का उदारीकरण

व्यापार अवरोध **-**

- सरकार द्वारा लगाए गए व्यापार प्रतिबंधों को व्यापार बाधाओं के रूप में जाना जाता है।
- सरकार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करने या बढ़ाने के लिए व्यापार बाधाओं को नियोजित कर सकती है

उदारीकरण **-**

- सरकार द्वारा निर्धारित बाधाओं या प्रतिबंधों को हटाना उदारीकरण कहलाता है।
- भारत ने 1991 में अपने व्यापार को उदार बनाया, जिससे कंपनियों को सामग्री और वस्तुओं का स्वतंत्र रूप से आयात और निर्यात करने की अनुमति मिल गई।
- उदारीकरण के निर्णय को शक्तिशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का समर्थन प्राप्त था।

विदेशी निवेश नीति **-** बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के रूप में जाना जाता है।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 1 : RESOURCE AND DEVELOPMENT

परिभाषा - हमारे वातावरण में उपलब्ध हर चीज जो हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है, बशर्ते, यह तकनीकी रूप से सुलभ *(technologically accessible)* हो, आर्थिक रूप से संभव*(economically feasible)* हो और सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य *(culturally acceptable)* हो, जिसे 'संसाधन' कहा जाता है।

सतत आर्थिक विकास का अर्थ है, 'पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना विकास होना चाहिए, और वर्तमान का विकास भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ समझौता नहीं करना चाहिए।'

पृथ्वी शिखर सम्मेलन एजेंडा **21, 1992 -** स्थान - ब्राज़ील में रियो डी जनेरियो

एजेंडा **21** के उद्देश्य

1. पृथ्वी शिखर सम्मेलन (एजेंडा 21) 1992 में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीईडी) विश्व नेताओं द्वारा हस्ताक्षरित घोषणा है, जो ब्राजील के रियो डी जनेरियो में हुआ था।
2. वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक आर्थिक विकास की तत्काल समस्याओं के समाधान के लिए शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
3. इसका उद्देश्य वैश्विक सतत विकास को प्राप्त करना है।
4. यह साझा हितों, आपसी जरूरतों और साझा जिम्मेदारियों पर वैश्विक सहयोग के माध्यम से पर्यावरणीय क्षति, गरीबी, बीमारी से निपटने का एक एजेंडा है।
5. एजेंडा 21 का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि प्रत्येक स्थानीय सरकार को अपना स्थानीय एजेंडा 21 बनाना चाहिए।

संसाधन नियोजन - संसाधनों के समुचित उपयोग की एक तकनीक या कौशल है। चूंकि संसाधन सीमित हैं और देश भर में असमान रूप से वितरित हैं, इसलिए उनकी योजना बनाना आवश्यक है।

संसाधन नियोजन में तीन चरण शामिल हैं*:*

(i) संसाधनों की सूची तैयार करना - पहले चरण में संसाधनों की विशेषताओं और गुणों का सर्वेक्षण, मानचित्रण और माप शामिल है।

(ii) विकास के लिए उपलब्धता के संदर्भ में मूल्यांकन - दूसरा चरण प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था और आवश्यकता के दृष्टिकोण से संसाधनों की जांच करता है।

(iii) संसाधनों के दोहन की योजना – तीसरा चरण उपयोग और पुन: उपयोग पर जोर देता है।

संसाधनों का संरक्षण

1. भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता बनाए रखते हुए वर्तमान पीढ़ी को अधिकतम लाभ प्रदान करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग का प्रबंधन संसाधन संरक्षण है।
2. संरक्षण में प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और तर्कसंगत उपयोग दोनों शामिल हैं।
3. संसाधनों का संरक्षण करना महत्वपूर्ण है क्योंकि कई संसाधन दुर्लभ हैं और विकसित होने में लाखों वर्ष लगते हैं।
4. संसाधनों का सावधानीपूर्वक उपयोग करना और उन्हें नवीनीकृत करने के लिए समय देना.
5. संसाधनों का अत्यधिक दोहन उन्हें समाप्त कर सकता है। इसलिए हमें संसाधनों को बचाने की जरूरत है।

भूमि संसाधन - हम भूमि पर रहते हैं, हम अपनी आर्थिक गतिविधियाँ भूमि पर करते हैं और हम इसका विभिन्न तरीकों से उपयोग करते हैं। इस प्रकार, भूमि अत्यंत महत्व का प्राकृतिक संसाधन है। यह प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन, मानव जीवन, आर्थिक गतिविधियों, परिवहन और संचार प्रणालियों का समर्थन करता है।

भारत के भूमि संसाधन

1. पर्वत - पर्वत देश के कुल सतह क्षेत्र का 30 प्रतिशत हिस्सा हैं और कुछ नदियों के बारहमासी प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं, पर्यटन और पारिस्थितिक पहलुओं के लिए सुविधाएं प्रदान करते हैं।
2. पठार - देश का लगभग 27 प्रतिशत क्षेत्रफल पठारी क्षेत्र है। इसमें खनिजों, जीवाश्म ईंधन और जंगलों के समृद्ध भंडार हैं।
3. मैदान - लगभग 43 प्रतिशत भूमि क्षेत्र मैदानी है, जो कृषि और उद्योग के लिए सुविधाएं प्रदान करता है।

भूमि संसाधनों का उपयोग - भूमि संसाधनों का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

1. वन - कुल भौगोलिक क्षेत्र के 33% से अधिक के लिए वन और वृक्ष कवर होना चाहिए, लेकिन ISFR, 2021 के अनुसार, कुल वन और वृक्ष कवर 24.62 प्रतिशत था।
2. खेती के लिए भूमि उपलब्ध नहीं है
   (ए) बंजर और बेकार भूमि
   (बी) गैर-कृषि उपयोग के लिए रखी गई भूमि जैसे - इमारतों, सड़कों, कारखानों, आदि।
3. अन्य बंजर भूमि (परती भूमि को छोड़कर)
   (ए) स्थायी चरागाह और चराई भूमि,
   (बी) विविध वृक्ष फसलों के पेड़ों के तहत भूमि (शुद्ध बोए गए क्षेत्र में शामिल नहीं),
   (सी) खेती योग्य बंजर भूमि (5 से अधिक कृषि वर्षों के लिए असिंचित छोड़ दिया गया)।
4. परती भूमि
   (ए) वर्तमान परती- (एक या एक से कम कृषि वर्ष के लिए खेती के बिना छोड़ दिया गया),
   (बी) वर्तमान परती के अलावा- (पिछले 1 से 5 कृषि वर्षों से बिना खेती के छोड़ दिया गया)।
5. शुद्ध बोया गया क्षेत्र (शुद्ध बोया गया क्षेत्र) - एक कृषि वर्ष में एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र + शुद्ध बोया गया क्षेत्र सकल फसल क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।

भूमि उपयोग पैटर्न - भूमि उपयोग पैटर्न से तात्पर्य भूमि के उपयोग के तरीके से है।

1. देश का वनावरण देश की कुल भूमि के निर्धारित 33% से कम है। भारत में कुल भूमि सतह के लगभग 24.62% भाग पर वन हैं।
2. भारत का कुल शुद्ध बुवाई क्षेत्र देश की कुल भूमि का 46.24% है।
3. शुद्ध बोया गया क्षेत्र हर राज्य में अलग-अलग होता है।
4. कुल भूमि का 3.38% चराई के लिए उपयोग किया जाता है जबकि शेष भूमि परती और बंजर भूमि है।
5. भारत में स्थायी चरागाह के अधीन भूमि कम हो गई है।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

भूमि निम्नीकरण - भूमि निम्नीकरण का अर्थ है भूमि की गुणवत्ता में इस तरह की कमी कि इसके पोषक तत्व और उर्वरता नष्ट हो जाती है और फसल उगाने में असमर्थ हो जाती है।

भूमि क्षरण के कारण हैं।

1. मिट्टी का प्रदूषण 2. मृदा अपरदन 3. अधिक चराई 4. बार-बार चरण में खनिजों का निष्कर्षण। 5. सूखा।

भूमि संरक्षण के उपाय

1. वनरोपण और चराई भूमि का उचित प्रबंधन। 2. पौधों की आश्रय पेटियों का रोपण। 3. अत्यधिक चराई पर नियंत्रण।
4. कंटीली झाड़ियाँ उगाकर बालू के टीलों को स्थिर करना। 5. खनन गतिविधियों पर नियंत्रण।
6. औद्योगिक अपशिष्टों और कचरे का उचित निर्वहन और निपटान.

संसाधन के रूप में मिट्टी - मिट्टी सबसे महत्वपूर्ण नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है। यह पौधों की वृद्धि का माध्यम है और पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीवों का समर्थन करता है। कुछ सेंटीमीटर गहराई तक मिट्टी बनने में लाखों साल लगते हैं।

मृदा निर्माण के कारक –

1. मूल चट्टान या आधार चट्टान, जलवायु, वनस्पति और जीवन के अन्य रूप और समय मिट्टी के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक हैं।
2. प्रकृति की विभिन्न शक्तियाँ जैसे तापमान में परिवर्तन, बहते पानी की क्रिया, हवा और हिमनद, डीकंपोजर की गतिविधियाँ आदि मिट्टी के निर्माण में योगदान करते हैं।
3. मिट्टी में कार्बनिक (ह्यूमस) और अकार्बनिक पदार्थ भी होते हैं।

मिट्टी का वर्गीकरण - मिट्टी के निर्माण, रंग, मोटाई, बनावट, उम्र, रासायनिक और भौतिक गुणों के लिए जिम्मेदार कारकों के आधार पर, भारत की मिट्टी को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।

1. जलोढ़ मिट्टी- A. खादर मिट्टी (नई) B. भांगर मिट्टी (पुरानी)
2. काली मिट्टी 3. लाल और पीली मिट्टी 4. लैटेराइट मिट्टी 5. शुष्क मिट्टी 6. वन मिट्टी

जलोढ़ मिट्टी: - पूरा उत्तरी मैदान जलोढ़ मिट्टी से बना है।

1. पूर्वी तटीय मैदानों में भी विशेष रूप से महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टा में पाए जाते हैं।
2. उपजाऊ मिट्टी इसलिए, कृषि उद्देश्य के लिए उपयुक्त है।
3. जलोढ़ मिट्टी के क्षेत्र सघन खेती और घनी आबादी वाले हैं।
4. पोटाश, फॉस्फोरिक एसिड और चूने से भरपूर
5. गन्ना, धान, गेहूं और अन्य अनाज और दलहनी फसलों के विकास के लिए आदर्श हैं।
6. पुराने जलोढ़ मिट्टी के मैदाने को बांगड़ और नए जलोढ़ मिट्टी के मैदाने को खादर कहा जाता है.

काली मिट्टी - रेगुर मिट्टी के रूप में भी जाना जाता है।

1. कपास मिट्टी - कपास उगाने के लिए आदर्श है।
2. महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठारों में भी गोदावरी और कृष्णा घाटियों के साथ पाए जाते हैं।
3. बेहद महीन मिट्टी की सामग्री क्ले से बना है।
4. नमी धारण करने की अत्यधिक क्षमता है।
5. कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश और चूने से भरपूर।

लैटेराइट मिट्टी: - उच्च तापमान और भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित होती है।

1. कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और ओडिशा और असम के पहाड़ी इलाकों में पाया जाता है।
2. खाद और उर्वरकों की पर्याप्त मात्रा के साथ खेती के लिए उपयुक्त।
3. कम ह्यूमस सामग्री क्योंकि उच्च तापमान और नमी के कारण डीकंपोजर ह्यूमस को समाप्त कर देते हैं.
4. चाय और कॉफी की फसल उगाई जाती है.

लाल और पीली मिट्टी: - दक्कन पठार के पूर्वी और दक्षिणी भागों में कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।

1. ओडिशा, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों, मध्य गंगा के मैदान के दक्षिणी हिस्सों और पश्चिमी घाट के पीडमोंट क्षेत्र में भी पाए जाते हैं।
2. क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों में लोहे के विसरण के कारण लाल रंग होता है।

शुष्क मिट्टी: - राजस्थान के पश्चिमी भागों में पाया जाता है।

1. उचित सिंचाई के बाद ये मिट्टी खेती योग्य हो जाती है।
2. ह्यूमस और नमी की कमी होती है क्योंकि शुष्क जलवायु, उच्च तापमान वाष्पीकरण को तेज करते हैं।
3. नमक की मात्रा बहुत अधिक होती है और
4. पानी को वाष्पित करके सामान्य नमक प्राप्त किया जाता है।

वन मिट्टी: - पहाड़ी और पहाड़ी क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहां पर्याप्त वर्षा वन उपलब्ध हैं।

1. घाटी के किनारों पर दोमट और सिल्टी होती है
2. वही ऊपरी ढलानों में मोटे दाने वाली होती है.
3. घाटियों के निचले हिस्सों में विशेष रूप से नदी गाद और जलोढ़ पंखे उपजाऊ हैं।

मृदा अपरदन - मृदा आवरण का अनाच्छादन होना और बाद में धुल बह जाना मृदा अपरदन कहलाता है।

मृदा संरक्षण - 1. समोच्च जुताई करके. 2. टेरेस फार्मिंग करके. 3. बारिश के पानी पर नियंत्रण।
4. फसलों/फसल चक्रण को कवर करें। 5. मृदा-संरक्षण खेती। 6. लवणता प्रबंधन

अवनालिका अपरदन **(GULLY EROSION) -**

1. पानी मृदा आवरण काटता है और गहरे नाले बना देता है इस प्रक्रिया को अवनालिका अपरदन कहते है।
2. यह भूमि खेती के लिए अनुपयुक्त हो जाती है और खराब भूमि (Badland) के रूप में जानी जाती है।
3. चंबल बेसिन में ऐसी भूमि को खड्ड कहा जाता है।

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 2 : FOREST AND WILDLIFE RESOURCES

भारत में वनस्पति और जीव

- भारत अपनी विशाल जैविक विविधता के मामले में दुनिया के सबसे अमीर देशों में से एक है, और दुनिया में प्रजातियों की कुल संख्या का लगभग 8 प्रतिशत (अनुमानित 1.6 मिलियन) यहीं है।
- भारत की कम से कम 10 प्रतिशत दर्ज जंगली वनस्पतियाँ और 20 प्रतिशत स्तनधारी खतरे की सूची में हैं।
- कई को 'गंभीर' के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो विलुप्त होने के कगार पर हैं जैसे चीता, गुलाबी सिर वाली बत्तख आदि।

प्रजातियों का वर्गीकरण : प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) ने अस्तित्व के क्रम में पौधों और जानवरों को वर्गीकृत किया है:

1. सामान्य प्रजातियाँ: वे प्रजातियाँ जिनकी जनसंख्या का स्तर उनके अस्तित्व के लिए सामान्य माना जाता है, जैसे मवेशी, साल, चीड़, कृंतक, आदि।
2. लुप्तप्राय प्रजातियाँ: ये वे प्रजातियाँ हैं जो विलुप्त होने के खतरे में हैं। उदा. के लिए, काला हिरण, मगरमच्छ, जंगली गधा आदि।
3. सुभेद्य प्रजातियाँ: ये वे प्रजातियाँ हैं जिनकी जनसंख्या उस स्तर तक गिर गई है जहाँ से नकारात्मक कारकों के सक्रिय रहने पर निकट भविष्य में इसके लुप्तप्राय श्रेणी में जाने की संभावना है। उदाहरण के लिए, नीली भेड़, एशियाई हाथी, गंगा डॉल्फिन, आदि।
4. दुर्लभ प्रजातियाँ: छोटी आबादी वाली प्रजातियाँ लुप्तप्राय या असुरक्षित श्रेणी में जा सकती हैं यदि उन्हें प्रभावित करने वाले नकारात्मक कारक सक्रिय रहते हैं। उदाहरण के लिए, हिमालयी भालू, जंगली एशियाई भैंस, रेगिस्तानी लोमड़ी, हॉर्नबिल आदि।
5. स्थानिक प्रजातियाँ: ये ऐसी प्रजातियाँ हैं जो केवल कुछ विशेष क्षेत्रों में पाई जाती हैं जो आमतौर पर प्राकृतिक या भौगोलिक बाधाओं से अलग होती हैं। उदाहरण के लिए, अंडमान चैती, निकोबार कबूतर, अंडमान जंगली सुअर, अरुणाचल प्रदेश में मिथुन।
6. विलुप्त प्रजातियाँ: ये वे प्रजातियाँ हैं जो ज्ञात या संभावित क्षेत्रों की खोज के बाद नहीं पाई जाती हैं जहाँ वे हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, एशियाई चीता, गुलाबी सिर वाली बत्तख आदि।

वनस्पतियों और जीवों की कमी के कारण - वनस्पतियों और जीवों की कमी का कारण बनने वाले विभिन्न कारक हैं:
1 बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाएँ 2. स्थानान्तरित खेती 3. खनन 4. चराई और ईंधन-लकड़ी संग्रह 5. अधिक जनसंख्या
भारत की जैव विविधता में गिरावट के लिए जिम्मेदार कारक:
1. आवास विनाश 2. शिकार, अवैध शिकार 3. अत्यधिक शोषण 4. पर्यावरण प्रदूषण 5. जंगल की आग
भारत में वन और वन्य जीवन का संरक्षण **(CBSE,2013)**

1. संरक्षणवादियों की मांग के कारण, भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम **1972** में लागू किया गया था, जिसमें आवासों की सुरक्षा के लिए विभिन्न प्रावधान थे।
2. कार्यक्रम का उद्देश्य शिकार पर प्रतिबंध लगाकर, उनके आवासों को कानूनी सुरक्षा देकर और वन्यजीवों में व्यापार को प्रतिबंधित करके कुछ लुप्तप्राय प्रजातियों की शेष आबादी की रक्षा करना था।
3. केंद्र और कई राज्य सरकारों ने राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्यों की स्थापना की।
4. केंद्र सरकार ने उन विशिष्ट जानवरों की सुरक्षा के लिए कई परियोजनाओं की भी घोषणा की, जो गंभीर रूप से खतरे में थे, जिनमें बाघ, एक सींग वाला गैंडा और अन्य शामिल हैं।
5. देश में बाघों की लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष **1973** में प्रोजेक्ट टाइगर भी शुरू किया गया था।

वनों को निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है: **(CBSE,2016)**

1. आरक्षित वन: जहां तक वन और वन्यजीव संसाधनों के संरक्षण का सवाल है, ये वन सबसे मूल्यवान माने जाते हैं। इसमें कुल वन भूमि का आधा भाग शामिल है।
2. संरक्षित वन: यह वन भूमि किसी भी और कमी से सुरक्षित है। कुल वन क्षेत्र का लगभग एक-तिहाई भाग संरक्षित वन है।
3. अवर्गीकृत वन: ये सरकारी और निजी व्यक्तियों और समुदायों दोनों से संबंधित अन्य वन और बंजर भूमि हैं। समुदाय और संरक्षण • जंगल कुछ पारंपरिक समुदायों का घर भी हैं।

स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षण - स्थानीय समुदाय अपनी दीर्घकालिक आजीविका सुरक्षित करने के लिए, सरकारी अधिकारियों के साथ मिलकर इन आवासों को संरक्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

1. राजस्थान के सरिस्का टाइगर रिजर्व में ग्रामीणों ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम का हवाला देकर खनन के खिलाफ लड़ाई लड़ी है.
2. हिमालय में प्रसिद्ध चिपको आंदोलन ने कई क्षेत्रों में वनों की कटाई का सफलतापूर्वक विरोध किया है. यह भी दिखाया गया है कि स्वदेशी प्रजातियों के साथ सामुदायिक वनीकरण बेहद सफल हो सकता है।
3. टिहरी और नवदान्य में बीज बचाओ आंदोलन जैसे किसानों और नागरिक समूहों ने दिखाया है कि सिंथेटिक रसायनों के उपयोग के बिना विविध फसल उत्पादन का पर्याप्त स्तर संभव और आर्थिक रूप से व्यवहार्य है।
4. बिश्नोई पश्चिमी राजस्थान का एक धार्मिक संप्रदाय है जो जानवरों सहित पर्यावरण की रक्षा के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है.

संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम **(CBSE,2013)** - 1988 में ओडिशा राज्य में शुरू किए गए संयुक्त वन प्रबंधन (जेएफएम) कार्यक्रम ने नष्ट हुए वनों के प्रबंधन और बहाली में स्थानीय समुदायों को शामिल करने का अच्छा उदाहरण दिखाया। जेएफएम का उद्देश्य

1. जैव विविधता की टिकाऊ तरीके से रक्षा करना
2. स्थानीय लोगों को औषधियाँ, फल, गोंद, रबर आदि जैसे वन उत्पादों से लाभ उठाने की अनुमति देकर उनकी जीवन शैली में सुधार करना।
3. इस कार्यक्रम के तहत, स्थानीय समुदाय नष्ट हुए वनों के प्रबंधन और बहाली में शामिल हैं।
4. जेएफएम का मुख्य उद्देश्य वनों को अतिक्रमण, चराई, चोरी और आग से बचाना और अनुमोदित संयुक्त वन प्रबंधन योजना के अनुसार वनों में सुधार करना है।
5. बदले में, इन समुदायों के सदस्य गैर-लकड़ी वन उपज जैसे मध्यस्थ लाभ के हकदार हैं।

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 3 : WATER RESOURCES

- जल एक नवीकरणीय संसाधन है.
- पृथ्वी की सतह का 3/4 हिस्सा पानी से ढका हुआ है, लेकिन इसका केवल एक छोटा सा हिस्सा ही उपयोग के लिए उपयुक्त है।

कुछ तथ्य और आंकड़े

1. विश्व का 97.5 प्रतिशत पानी महासागरों में है और केवल 2.5 प्रतिशत मीठा पानी है।
2. इस मीठे पानी का लगभग 70 प्रतिशत बर्फ की चादरों और ग्लेशियरों के रूप में होता है, 30 प्रतिशत दुनिया के जलभृतों में भूजल के रूप में संग्रहीत होता है।
3. भारत में वैश्विक वर्षा का लगभग 4 प्रतिशत प्राप्त होता है और प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष पानी की उपलब्धता के मामले में भारत दुनिया में 133वें स्थान पर है।
4. यह अनुमान लगाया गया है कि 2025 तक भारत का बड़ा हिस्सा पानी की अत्यधिक कमी वाले देशों या क्षेत्रों में शामिल हो जाएगा।

जल की कमी : जल की कमी का अर्थ है पानी की कमी। यह आमतौर पर कम वर्षा वाले या सूखाग्रस्त क्षेत्रों से जुड़ा होता है।
केस स्टडी - इज़राइल में प्रति वर्ष 25 सेमी वर्षा भारत में प्रति वर्ष 114 सेमी वर्षा
जल की कमी के कारण हैं:
1. अत्यधिक शोषण 2. जलवायु परिवर्तन - जैसे सूखा और बाढ़
3. औद्योगीकरण और शहरीकरण - मौजूदा मीठे पानी के संसाधनों पर दबाव।
4. जनसंख्या - मानव उपभोग में वृद्धि 5. घरेलू एवं औद्योगिक अपशिष्ट। (कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु)

जल संरक्षण

1. पानी का धारणीय उपयोग करें 2. वर्षा जल संचयन. 3. पौधों की ड्रिप सिंचाई द्वारा।
4. चेक बांध (Check dams) और बहुउद्देश्यीय नदी परियोजना 5. औद्योगीकरण और शहरीकरण को कायम रखना
6. अपशिष्ट जल का उपचार 7. कम उपयोग करें -पुन: उपयोग करें - पुनर्चक्रण करे. (कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु)

बहुउद्देश्यीय नदी परियोजनाएँ और एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन

बांध - बांध बहते पानी के बीच एक अवरोध है जो प्रवाह को बाधित, निर्देशित या धीमा करता है, अक्सर जलाशय, झील या अवरोध का निर्माण करता है।

- जवाहरलाल नेहरू ने गर्व से बांधों को 'आधुनिक भारत के मंदिर' घोषित किया.

बहुउद्देश्यीय नदी परियोजनाएं - बहुउद्देश्यीय नदी परियोजनाएं बड़े बांध बनाती हैं जो नदी के पानी को रोकने के अलावा कई उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं और बाद में कृषि क्षेत्रों की सिंचाई के लिए उपयोग की जाती हैं। उदाहरण के लिए, सतलुज-ब्यास नदी बेसिन, भाखड़ा-नांगल परियोजना आदि।

बहुउद्देश्यीय नदी परियोजनाओं के लाभ हैं:

1. विद्युत उत्पादन 2. कृषि गतिविधि के लिए सिंचाई 3. घरेलू और औद्योगिक उपयोग के लिए जल आपूर्ति
4. बाढ़ नियंत्रण 5. नेविगेशन और पर्यटन 6. मछली पालन खेती

बहुउद्देश्यीय परियोजनाओं के नुकसान हैं:

1. नदी में कम जल प्रवाह, यह नदी के जलीय आवासों को नष्ट कर देता है।
2. पारिस्थितिक परिणाम - यह मौजूदा वनस्पति को जलमग्न कर देता है।
3. अत्यधिक वर्षा के समय बाढ़ को नियंत्रित करने में असफल होना।
4. बांध प्रेरित भूकंप -कोयना भूकंप, 1967
5. बांध जल जनित रोग।
6. बहुउद्देश्यीय नदी परियोजनाओं के विरुद्ध आंदोलन.
7. स्थानीय समुदायों का बड़े पैमाने पर विस्थापन है। 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' और 'टिहरी बांध आंदोलन' आदि –
8. अंतरराज्यीय जल विवाद।

वर्षा जल संचयन - वर्षा जल संचयन से तात्पर्य उस सतह से वर्षा जल के भंडारण और उपयोग से है जिस पर यह गिरता है।

1. पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में, लोगों ने कृषि के लिए पश्चिमी हिमालय के 'गुल' या 'कुल' जैसे डायवर्जन चैनल बनाए।
2. राजस्थान में, पीने के पानी को संग्रहित करने के लिए आमतौर पर 'छत पर वर्षा जल संचयन' का अभ्यास किया जाता था।
3. बंगाल के बाढ़ के मैदानों में, लोगों ने अपने खेतों की सिंचाई के लिए जलप्लावन चैनल विकसित किए।
4. शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, कृषि क्षेत्रों को वर्षा आधारित भंडारण संरचनाओं में परिवर्तित कर दिया गया, जिससे पानी खड़ा रह सके और मिट्टी में नमी बनी रहे।
5. राजस्थान के अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में, लगभग सभी घरों में पारंपरिक रूप से पीने के पानी के भंडारण के लिए भूमिगत टैंक या टांका होते थे।
6. बांस ड्रिप सिंचाई प्रणाली - मेघालय

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER - 4 : AGRICULTURE

कृषि के प्रकार
A. आदिम निर्वाह कृषि :
1.'काटो और जलाओ' कृषि। 2.कुदाल, दाव और खोदने वाली छड़ियों जैसे आदिम उपकरणों का उपयोग
3.परिवार/सामुदायिक श्रम. 4.खेती मानसून पर निर्भर है, 5.मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता।
B. गहन निर्वाह कृषि
1.श्रम प्रधान खेती 2.जैव रासायनिक की उच्च खुराक
3.अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए सिंचाई का उपयोग किया जाता है।
4.यह विधि आमतौर पर वहां की जाती है जहां कम भूमि उपलब्ध होती है।
C. व्यावसायिक खेती :
1.आधुनिक पद्धति का प्रयोग 2.उच्च किस्म उपज (HYV) बीज,
3.रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशक उपयोग
4.रोपण भी एक प्रकार की व्यावसायिक खेती है।
5.इस प्रकार की खेती में एक ही फसल बड़े क्षेत्र में उगाई जाती है।

Season	**Kharif /** ख़रीफ़	**Rabi /** रबी	**Zaid /** जायद
बुआई का मौसम	मानसून की शुरुआत मे	सर्दी	रबी और ख़रीफ़ मौसम के बीच, गर्मी के महीनों के दौरान एक छोटा मौसम होता है जिसे ज़ैद मौसम के रूप में जाना जाता है (मार्च से जुलाई के महीनों में)
कटाई का मौसम	September-October	गर्मी	रबी और ख़रीफ़ सीज़न के बीच, गर्मी के महीनों के दौरान एक छोटा सीज़न होता है जिसे जायद सीज़न के रूप में जाना जाता है
महत्वपूर्ण फसलें	धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, मूंग, उड़द, कपास, जूट,मूंगफली और सोयाबीन।	गेहूँ, जौ, मटर, चना और सरसों।	तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, सब्जियाँ और चारा फसलें

चावल - 1. यह एक ख़रीफ़ की फसल है. 2. तापमान - उच्च तापमान. 25°C से ऊपर
3. वर्षा - वार्षिक 100 सेमी से ऊपर और उच्च आर्द्रता 4. मिट्टी - जलोढ़
5. स्थान - यह उत्तर और उत्तर-पूर्वी भारत के मैदानी इलाकों, तटीय क्षेत्रों और डेल्टा क्षेत्र में उगाया जाता है
6. मुख्य खाद्य फसल - हमारा देश चीन के बाद दुनिया में चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
गेहूं - 1. यह रबी की फसल है 2. तापमान - ठंडा मौसम और तेज़ धूप
3. वर्षा - वार्षिक वर्षा *50* से *75* सेमी 4. मिट्टी - जलोढ़, काली
5. स्थान - गेहूं उगाने वाले क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में गंगा-सतलुज के मैदान और दक्कन में काली मिट्टी वाले क्षेत्र हैं।
6. यह देश के उत्तर और उत्तर पश्चिमी भाग में मुख्य खाद्य फसल है।
मोटे अनाज - इनका पोषण मूल्य बहुत अधिक होता है।
1. ज्वार - क्षेत्रफल और उत्पादन की दृष्टि से तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल।
- यह वर्षा आधारित फसल है जो अधिकतर नम क्षेत्रों में उगाई जाती है।
- मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में उत्पादित किया जाता है।

2. बाजरा - रेतीली मिट्टी और उथली काली मिट्टी पर अच्छी तरह उगता है।
- प्रमुख उत्पादक राज्य राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और हरियाणा हैं।

3. रागी - लाल, काली, रेतीली, दोमट और उथली काली मिट्टी पर अच्छी तरह उगती है।
- यह शुष्क क्षेत्रों की फसल है.
- प्रमुख उत्पादक राज्य कर्नाटक, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, झारखंड और अरुणाचल प्रदेश हैं।

दालें - भारत दुनिया में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता भी है।
1. प्रोटीन का प्रमुख स्रोत.
2. इन्हें कम नमी की आवश्यकता होती है और ये शुष्क परिस्थितियों में भी उग जाती है।
3. भारत में उगाई जाने वाली प्रमुख दालें हैं तूर (अरहर), उड़द, मूंग, मसूर, मटर और चना।
4. नाइट्रिफिकेशन - दालें अधिकतर अन्य फसलों के साथ चक्र में उगाई जाती हैं ताकि मिट्टी की उर्वरता बहाल हो सके।
5. उत्पदक - मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक हैं।

गन्ना - उष्णकटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय फसल है।
1. तापमान - 21°C से 27°C
2. वार्षिक वर्षा - 75 से 100 सेमी
3. गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ता है।

4. ब्राजील के बाद भारत गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
5. गन्ना चीनी, गुड़, खंसारी और गुड़ का मुख्य स्रोत है।
6. प्रमुख उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, बिहार, पंजाब और हरियाणा हैं।

तिलहन

1. तिलहन देश के कुल फसली क्षेत्र का लगभग 12 प्रतिशत भाग कवर करता है।
2. इनका उपयोग खाना पकाने के माध्यम के साथ-साथ साबुन, सौंदर्य प्रसाधन और मलहम के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में किया जाता है।
3. मूंगफली (खरीफ) की फसल और भारत में उत्पादित प्रमुख तिलहनों का आधा हिस्सा है। गुजरात मूंगफली का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।
4. तिलहन - सरसों (रबी), तिल (खरीफ), अरंडी के बीज, अलसी, नारियल, सोयाबीन (खरीफ), कपास के बीज, सूरजमुखी

चाय

1. चाय की खेती रोपण कृषि का उदाहरण है।
2. यह भारत में शुरू में अंग्रेजों द्वारा पेश की गई एक महत्वपूर्ण पेय फसल है।
3. इसके लिए पूरे वर्ष लगातार बारिश के साथ गर्म और नम ठंढ-मुक्त जलवायु की आवश्यकता होती है।
4. प्रमुख उत्पादक राज्य असम, दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी जिले की पहाड़ियाँ, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल हैं।

कॉफी

1. भारतीय कॉफ़ी दुनिया भर में अपनी अच्छी गुणवत्ता के लिए जानी जाती है।
2. इसकी खेती कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के नीलगिरि तक ही सीमित है।

बागवानी फसलें - भारत उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण फलों का उत्पादक है। भारत विश्व की लगभग 13 प्रतिशत सब्जियाँ पैदा करता है।

रबड़

1. यह भूमध्यरेखीय फसल है, लेकिन विशेष परिस्थितियों में इसे उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में भी उगाया जाता है।
2. नम और आर्द्र जलवायु
3. वर्षा - 200 सेमी से अधिक।
4. तापमान - 25°C से ऊपर.
5. यह मुख्य रूप से केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और मेघालय की जी पहाड़ियों में उगाया जाता है।

कपास

1. ख़रीफ़ की फसल,
2. मिट्टी - काली उच्च तापमान, हल्की वर्षा या सिंचाई,
3. 210 पाला-मुक्त दिन
4. इसके विकास के लिए तेज़ धूप-छाँव।
5. Producing in MH GJ, MP, KR, AP, TN, PN, HR and UP

जूट

1. यह बाढ़ के मैदानों में अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ मिट्टी पर अच्छी तरह से उगता है, जहां हर साल मिट्टी का नवीनीकरण किया जाता है।
2. प्रमुख जूट उत्पादक राज्य पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, ओडिशा और मेघालय हैं।
3. इसका उपयोग टाट, चटाई, रस्सियाँ, सूत, कालीन और अन्य कलाकृतियाँ बनाने में किया जाता है।

कृषि में संस्थागत एवं प्रौद्योगिकी सुधार

संस्थागत सुधार

1. भूमि सुधार - भूमि जोतों को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए उनका सामूहिकीकरण और समेकन।
2. साख/ऋण - केसीसी,1998
3. सब्सिडी - जैसे उर्वरक एन.पी.के., डी.ए.पी.
4. सरकारी नीतियां, योजना और कार्यक्रम - एमएसपी
5. तिलहन, दलहन फसलों को बढ़ावा देना

प्रौद्योगिकी सुधार

1. खेती का नया तरीका
2. उच्च उपज किस्म (HYV) बीज
3. यंत्रीकरण
4. आधुनिक सिंचाई तकनीक - स्प्रिंकलर, ड्रिप सिंचाई
5. जैव उर्वरक

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER : 5 MINERALS AND ENERGY RESOURCES

खनिज क्या है? - भूविज्ञानी खनिज को "एक निश्चित आंतरिक संरचना के साथ समरूप, प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले पदार्थ" के रूप में परिभाषित करते हैं।

1. कठोरता, रंग और रूप के विशेष भौतिक गुणों वाला खनिज।
2. खनिज "अयस्कों" में पाए जाते हैं।
3. आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में खनिज - टिन, तांबा, जस्ता और सीसा आदि।
4. अवसादी चट्टानों में खनिज - कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश, नमक और सोडियम आदि।
5. सतही चट्टानों के अपघटन से - बॉक्साइट।
6. घाटी के फर्श और पहाड़ियों के आधार की रेत में - जलोढ़ निक्षेप के रूप में जिसे "प्लेसर निक्षेप" कहा जाता है। - सोना, चाँदी, टिन और प्लैटिनम।
7. समुद्र - नमक, मैग्नीशियम न्यूड्ल्स और ब्रोमीन।

लौह अयस्क - बुनियादी खनिज व औद्योगिक विकास की रीढ़।

1. मैग्नेटाइट सर्वोत्तम लौह अयस्क है (70% Iron)
2. भारत अच्छी गुणवत्ता वाले लौह अयस्कों से समृद्ध है।

भारत में प्रमुख लौह अयस्क बेल्ट हैं - ओडिशा-झारखंड बेल्टछत्तीसगढ़ महाराष्ट्र में, - दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर बेल्ट
- कर्नाटक में बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिकमगलूर-तुमकुर बेल्ट - महाराष्ट्र-गोवा बेल्ट गोवा और महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में।

मैंगनीज - स्टील के निर्माण में उपयोग किया जाता है, ब्लीचिंग पाउडर, कीटनाशकों और पेंट के निर्माण में उपयोग किया जाता है।

अलौह खनिज

1. तांबा - लचीला और अच्छा चालक है।
- विद्युत केबल, इलेक्ट्रॉनिक्स और रासायनिक उद्योगों में उपयोग किया जाता है।
- खदान: MP में बालाघाट, राजस्थान में खेतड़ी
2. बॉक्साइट - एल्यूमीनियम का कच्चा माल.
- अत्यधिक हल्केपन के साथ-साथ अच्छी चालकता और महान लचीलापन के साथ लोहे की ताकत को संयोजित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
- अमरकंटक पठार, मैकल पहाड़ियों और बिलासपुर-कटनी के पठारी क्षेत्र में पाया जाता है।

गैर-धात्विक खनिज

1. अभ्रक - इसकी उत्कृष्ट डाइ-इलेक्ट्रिक ताकत, कम बिजली हानि कारक, इन्सुलेशन गुणों और उच्च वोल्टेज के प्रतिरोध के कारण इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में उपयोग किया जाता है।
2. चूना पत्थर - यह सीमेंट उद्योग के लिए बुनियादी कच्चा माल है. ब्लास्ट फर्नेस में लौह अयस्क को पिघलाने के लिए आवश्यक है।

खनिजों का संरक्षण क्यों करें?

1. देश के विकास के लिए खनिज बहुत महत्वपूर्ण हैं। 2. विश्व में खनिज भण्डार बहुत कम मात्रा में हैं.
3. खनिज निर्माण की भूवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ बहुत धीमी हैं जबकि खपत दर बहुत तेज़ है इसलिए, खनिज संसाधन सीमित और गैर-नवीकरणीय हैं। 4. इसलिए, हमें खनिजों का संरक्षण करना होगा ताकि यह भावी पीढ़ी के लिए उपलब्ध रहे।

खनिजों का संरक्षण कैसे करें?

1. योजनाबद्ध एवं टिकाऊ उपयोग। 2. धातुओं का पुनर्चक्रण। 3. प्रौद्योगिकियों में सुधार करें ।
4. योजनाबद्ध और टिकाऊ तरीके से एक संयुक्त प्रयास। 5. स्क्रैप धातुओं और अन्य विकल्पों का उपयोग करना।

ऊर्जा संसाधन - खाना पकाने, रोशनी और गर्मी प्रदान करने, वाहनों को चलाने और उद्योगों में मशीनरी चलाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसे कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम जैसे ईंधन खनिजों और बिजली से उत्पन्न किया जा सकता है।

ऊर्जा संसाधनों को इस प्रकार वर्गीकृत

1. पारंपरिक ऊर्जा स्रोत: - जलाऊ लकड़ी, मवेशियों का गोबर, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और बिजली - जल विद्युत और थर्मल बिजली
2. गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत: - सौर, पवन, ज्वारीय, भूतापीय, बायोगैस और परमाणु ऊर्जा।

ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत

A. कोयला - यह जीवाश्म ईंधन है।

1. इसका उपयोग बिजली उत्पादन, उद्योग को ऊर्जा की आपूर्ति के साथ-साथ घरेलू जरूरतों के लिए भी किया जाता है।
2. भारत में कोयला गोंडवाना एवं tertiary शैल अवस्था में पाया जाता है।
3. गोंडवाना कोयला स्थित हैं - दामोदर घाटी (पश्चिम बंगाल-झारखंड), झरिया, रानीगंज, बोकारो, गोदावरी, महानदी, सोन और वर्धा घाटियाँ।
4. tertiary शैल कोयला उत्तर पूर्वी राज्यों मेघालय, असम, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में पाए जाते हैं।

कोयले के प्रकार

1. एन्थ्रेसाइट: उच्चतम गुणवत्ता व कठोर
2. बिटुमिनस: व्यावसायिक उपयोग में लोकप्रिय
3. लिग्नाइट: निम्न श्रेणी का भूरा कोयला
4. पीट: कम कार्बन और उच्च नमी।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

B. पेट्रोलियम **-** यह जीवाश्म ईंधन है।

1. यह गर्मी और प्रकाश के लिए ईंधन, मशीनरी के लिए स्नेहक (lubricants), विनिर्माण उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करता है।
2. पेट्रोलियम रिफाइनरियां सिंथेटिक कपड़ा, उर्वरक और कई रासायनिक उद्योगों के लिए "नोडल उद्योग" के रूप में कार्य करती हैं।
3. भारत का 63% पेट्रोलियम मुंबई हाई से, गुजरात से 18%, असम से 16% उत्पादन होता है

C. प्राकृतिक गैस **-** यह जीवाश्म ईंधन है।

1. पेट्रोकेमिकल उद्योग में उपयोग.
2. कम CO2 उत्सर्जन के कारण पर्यावरण अनुकूल ईंधन।
3. कृष्णा-गोदावरी बेसिन (KGB), मुंबई हाई और संबद्ध क्षेत्रों, कैम्बे की खाड़ी में प्राकृतिक गैस की खोज की गई है। अंडमान व निकोबार द्वीप समूह।

D. विद्युत - मुख्य रूप से दो प्रकार से उत्पन्न

जल विद्युत**-** बहते पानी से पनबिजली टरबाइन चलाता है.

1. यह एक नवीकरणीय संसाधन है.
2. भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी निगम, कोपिली हाइडल परियोजना आदि जैसी बहुउद्देश्यीय परियोजनाएं जल विद्युत का उत्पादन करती हैं।

तापीय विद्युत**-** कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का उपयोग करके उत्पन्न।

1. थर्मल पावर का उत्पादन करने के लिए टर्बाइनों को चलाने के लिए कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे अन्य ईंधन को जलाकर।
2. थर्मल पावर स्टेशन बिजली पैदा करने के लिए गैर-नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन का उपयोग करते हैं।

ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोत

1.परमाणु ऊर्जा **-** परमाणु विद्युत शक्ति उत्पन्न करते हैं।

- यूरेनियम और थोरियम झारखंड और राजस्थान की अरावली पर्वतमाला में उपलब्ध हैं।
- थोरियम (भविष्य का ईंधन) केरल की मोनाज़ाइट रेत में पाया जाता है।

2. सौर ऊर्जा यह एक नवीकरणीय संसाधन है।

- फोटोवोल्टिक तकनीक सूर्य के प्रकाश को बिजली में.
- स्थापित शुल्क अधिक है.
- सौर ऊर्जा ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में लोकप्रिय हो रही है
- सौर ऊर्जा पर्यावरण अनुकूल है.

3. पवन ऊर्जा पवन ऊर्जा की अपार संभावनाएं हैं।

- सबसे बड़ा पवन फार्म तमिलनाडु में नागरकोइल से मदुरै तक स्थित है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र और लक्षद्वीप में महत्वपूर्ण पवन फॉर्म हैं।
- नगरकोइल और जैसलमेर पवन ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध हैं।

4. बायोगैस **-** ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू खपत के लिए बायोगैस का उत्पादन करने के लिए झाड़ियों, कृषि अपशिष्ट, पशु, मानव अपशिष्ट का उपयोग किया जाता है।

- मवेशियों के गोबर का उपयोग करने वाले बायोगैस संयंत्रों को 'गोबर गैस संयंत्र' के रूप में जाना जाता है।
- बायोगैस किसानों को ऊर्जा और जीवन की बेहतर गुणवत्ता के रूप में दोहरा लाभ प्रदान करती है।

5. ज्वारीय ऊर्जा

- समुद्री ज्वार का उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है।
- भारत में - खंभात की खाड़ी, गुजरात में कच्छ की खाड़ी आदि

6. भू-तापीय ऊर्जा **–**

- पृथ्वी के आंतरिक भाग की ऊष्मा का उपयोग करके उत्पन्न ऊष्मा और बिजली को भूतापीय ऊर्जा कहा जाता है।
- उच्च तापमान वाले क्षेत्र में भूजल चट्टानों से ऊष्मा अवशोषित कर लेता है और गर्म हो जाता है।
- भूजल भाप में बदल जाता है - इस भाप का उपयोग टरबाइन चलाने और बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है।
- भारत में भूतापीय परियोजनाएँ –

  I. हिमाचल प्रदेश में पार्वती घाटी मणिकर्ण, II. पुगा घाटी, लद्दाख।

ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण - आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा एक बुनियादी आवश्यकता है।

1. ऊर्जा स्रोतों का पुन: उपयोग, कटौती और पुनर्चक्रण।
2. ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देना।
3. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना।
4. गैर-पारंपरिक स्रोतों का उपयोग बढ़ाना।
5. व्यक्तिगत वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें।
6. उपयोग में न होने पर बिजली बंद कर देना।
7. बिजली बचाने वाले उपकरणों का उपयोग करना।

CLASS 10 : GEOGRAPHY IMPORTANT NOTES IN HINDI
CHAPTER 6 - MANUFACTURING INDUSTRIES

विनिर्माण महत्व-कच्चे माल से अधिक मूल्यवान उत्पादों तक प्रसंस्करण के बाद बड़ी मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन विनिर्माण कहलाता है।

द्वितीयक क्षेत्र / विनिर्माण क्षेत्र को सामान्य रूप से विकास और आर्थिक विकास की रीढ़ माना जाता है क्योंकि:**(CBSE,202)**

1. कृषि का आधुनिकीकरण - कृषि पर बोझ कम करना
2. द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों में नौकरियाँ उपलब्ध कराना।
3. देश से बेरोजगारी और गरीबी का उन्मूलन।
4. विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।
5. आर्थिक विकास में मदद करता है.

उद्योगों का वर्गीकरण

I. कच्चे माल के आधार पर**-**

1. कृषि आधारित- कपास, जूट, चीनी आदि।
2. खनिज आधारित- लोहा, सीमेंट, एल्यूमीनियम आदि।

II. भूमिका के अनुसार**-**

1. बुनियादी उद्योग- लोहा और इस्पात, तांबा
2. उपभोक्ता उद्योग- चीनी, कागज आदि।

III. पूंजी निवेश के आधार पर**-**

1. लघु उद्योग- 2. बड़े पैमाने के उद्योग-

IV. स्वामित्व के आधार पर**-**

1. सार्वजनिक क्षेत्र- BHEL 2. निजी क्षेत्र- TISCO 3. संयुक्त क्षेत्र- ऑयल इंडिया लिमिटेड 4. सहकारी क्षेत्र- महाराष्ट्र में चीनी

V. कच्चे माल एवं तैयार माल की मात्रा एवं वजन के आधार पर**-**

1. भारी उद्योग- लोहा और इस्पात
2. हल्के उद्योग- विद्युत उद्योग

वस्त्र उद्योग का महत्व

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में अद्वितीय स्थिति, 2. यह औद्योगिक उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देता है,
3. रोजगार सृजन 4.विदेशी मुद्रा आय.
5.आत्मनिर्भर उद्योग 6.देश से गरीबी मिटाना.

"महात्मा गांधी ने सूत कातने और खादी बुनने पर क्यों जोर दिया?"

1. सूती वस्त्र उद्योग

1. पहली सूती मिल की स्थापना - मुंबई,1854.
2. कच्चे कपास की उपलब्धता, बाजार, परिवहन, श्रम, नम जलवायु, बंदरगाह सुविधाओं आदि के कारण स्थित - महाराष्ट्र, गुजरात।
3. खादी कुटीर उद्योग के रूप में बुनकरों को उनके घर में ही रोजगार उपलब्ध कराती है।

समस्याएँ

1. लंबे रेशे वाली कपास की कमी 2. अनियमित बिजली आपूर्ति. 3.पुरानी तकनीक मशीनरी,
4. श्रम का कम उत्पादन 5. सिंथेटिक फाइबर उद्योग के साथ प्रतिस्पर्धा।

2. पटसन कपड़ा उद्योग **-** सुनहरा धागा - भारत कच्चे जूट और जूट के सामान का सबसे बड़ा उत्पादक है।

1. पहली जूट मिल – रिशरा,1859 (कोलकाता के पास)
2. भारत में अधिकांश जूट मिलें पश्चिम बंगाल में स्थित हैं, मुख्यतः हुगली नदी के किनारे।

हुगली बेसिन जूट स्थान के लिए जिम्मेदार कारक

1. जूट के कच्चे माल का उत्पादन क्षेत्र 2.सस्ते मज़दूर
3. परिवहन-मिलों तक कच्चे माल की आवाजाही की सुविधा के लिए रेलवे, सड़क मार्ग और जलमार्ग
4. एक बड़े शहरी केंद्र के रूप में कोलकाता निर्यात के लिए बैंकिंग, बीमा और बंदरगाह सुविधाएं प्रदान करता है।

चुनौती - अंतरराष्ट्रीय बाजार में सिंथेटिक विकल्प और अन्य देशों जैसे-बांग्लादेश, मिस्र और थाईलैंड से प्रतिस्पर्धा।

चीनी उद्योग **-** भारत दुनिया का दूसरा बड़ा उत्पादक है।

- मिलें - यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, पंजाब और हरियाणा प्रमुख चीनी उत्पादक राज्य हैं।
- हाल के वर्षों में गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होने के कारण चीनी मिलें दक्षिणी और पश्चिमी, विशेषकर महाराष्ट्र में स्थानांतरित हो गईं।

चीनी उद्योग के समक्ष चुनौतियाँ**:**

1. अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा
2. उद्योग की मौसमी प्रकृति.
3. उत्पादन के पुराने एवं अप्रभावी तरीके.
4. वजन कम करने वाले उद्योग (Weight losing industries)
5. गन्ने को कारखानों तक पहुंचाने में परिवहन में देरी।

By Govind Kumar Meena
TGT SST Kendriya Vidyalaya Guna

लौह और इस्पात उद्योग -

- बुनियादी उद्योग - अन्य उद्योगों को चलाने के लिए सभी प्रकार की मशीनरी प्रदान करता है।
- स्टील के उत्पादन और खपत को अक्सर देश के विकास का सूचकांक माना जाता है.
- छोटानागपुर पठारी क्षेत्र में लौह एवं इस्पात उद्योगों का सर्वाधिक संकेंद्रण है।

Q. भारत लौह और इस्पात के उत्पादन में अपनी पूरी क्षमता से प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं है क्योंकि ***?***

1. कोकिंग कोल की उच्च लागत और सीमित उपलब्धता
2. श्रम की कम उत्पादकता 3. ऊर्जा की अनियमित आपूर्ति 4. ख़राब बुनियादी ढांचा

एल्यूमीनियम प्रगलन उद्योग-

1. भारत में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण धातुकर्म उद्योग।
2. कच्चा माल - बॉक्साइट।
3. यह हल्का है, जंग प्रतिरोधी है, ऊष्मा का अच्छा संवाहक है, लचीला है.
4. विमान, बर्तन और तार बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।
5. इसने कई उद्योगों में स्टील, तांबा, जस्ता और सीसा के विकल्प के रूप में लोकप्रियता हासिल की है।

उर्वरक उद्योग -

1. कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण
2. उर्वरक संयोजन - नाइट्रोजन *(N-*यूरिया*),* फॉस्फेट *(P),* और पोटाश *(K)*
3. भारत नाइट्रोजन (एन-यूरिया) और अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) का उत्पादन करता है
4. भारत नाइट्रोजन उर्वरकों का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
5. पोटाश पूरी तरह से आयात किया जाता है क्योंकि देश में इसका कोई भंडार नहीं है।
6. इस उद्योग वाले मुख्य राज्य हैं: गुजरात, तमिलनाडु, यू.पी., पंजाब और केरल।

सीमेंट उद्योग

1. कच्चा माल- चूना पत्थर, सिलिका, एल्यूमिना और जिप्सम जैसे भारी और भारी कच्चे माल।
2. पहला सीमेंट संयंत्र चेन्नई में 1904 में स्थापित.
3. अवस्थित - गुजरात में स्थित संयंत्र हैं।
4. यह उद्योग उत्पादन के साथ-साथ निर्यात के मामले में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

वाहन निर्माण उद्योग

1. यह उद्योग अच्छी सेवाओं और यात्रियों के त्वरित परिवहन के लिए वाहन उपलब्ध कराता है।
2. पिछले 15 वर्षों में उद्योग ने तेजी से विकास का अनुभव किया है।
3. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नई तकनीक लेकर आया और उद्योग को वैश्विक विकास के साथ जोड दिया

सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग

1. इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में ट्रांजिस्टर सेट से लेकर टेलीविजन, टेलीफोन, सेलुलर टेलीकॉम, पेजर, टेलीफोन एक्सचेंज, रडार, कंप्यूटर और दूरसंचार उद्योग के लिए आवश्यक कई अन्य उपकरणों तक उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।
2. बैंगलोर को भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी माना जाता है।
3. यह उद्योग अपने तेजी से बढ़ते बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) क्षेत्र के कारण पिछले दो या तीन वर्षों में एक प्रमुख विदेशी मुद्रा अर्जक रहा है।

प्रदूषण **&** नियंत्रण

उद्योग इसके लिए जिम्मेदार हैं।

1. वायु प्रदूषण 2. भूमि प्रदूषण
3. ध्वनि प्रदूषण 4. जल प्रदूषण

थर्मल (जल) प्रदूषण: यह तब होता है जब कारखानों और थर्मल संयंत्रों से गर्म पानी को ठंडा होने से पहले नदियों और तालाबों में बहा दिया जाता है। थर्मल (जल) प्रदूषण जलीय जीवन पर क्या होगा असर**?**

पर्यावरणीय क्षरण का नियंत्रण

*(*कोई ***6*** प्रासंगिक बिंदु*)*